ओ३म्
आर्य जगत्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 25 नवम्बर 2018 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार, 25 नवम्बर 2018 से 01 दिसम्बर 2018

मार्गशीर्ष कृ. – 03 ● वि० सं०–2075 ● वर्ष 60, अंक 47, प्रत्येक मंगलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 194 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,119 ● पृ.सं. 1–12 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

महात्मा हंसराज जी पुण्यतिथि को समर्पित 'उत्सर्ग पर्व' का भव्य आयोजन

महात्मा हंसराज जी के गुणों को अपने जीवन में उतारें डॉ. पूनम सूरी

''महात्मा हंसराज जी के तप और त्याग का कोई मुकाबला नहीं ओर इतिहास में उनके जैसा कोई और अभी तक पैदा नहीं हुआ। हंसराज जी की पुण्यतिथि को मनाने का उद्देश्य तभी पूरा होगा जब हम उस सच्चे तपस्वी के गुणों में से कुछ को अपने जीवन में अवश्य उतारें व बच्चों में वही गुण विकसित करें ताकि वे नैतिक मूल्यों को अपनाते हुए अच्छे इंसान बन सके।'' यह उद्गार आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के प्रधान डॉ. पूनम सूरी जी ने आर्य बन्धुओं को सम्बोधित करते हुए उत्सर्ग पर्व के अवसर पर व्यक्त किये।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, पंजाब तथा आर्य युवा समाज, पंजाब के तत्त्वावधान में त्यागमूर्ति महात्मा हंसराज जी की पुण्यतिथि को समर्पित 'उत्सर्ग पर्व' का भव्य आयोजन डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, लॉरेंस रोड, अमृतसर के प्रांगण में दिनाँक 10 नवंबर, 2018 को किया गया। इस आयोजन में आर्य रत्न डॉ. पूनम सूरी जी, 'पद्मश्री सम्मान से अलंकृत' मुख्यातिथि तथा उनकी सहधर्मिणी श्रीमती मणि सूरी जी विशेष रूप से उपस्थित थे।

उपसभा पंजाब के प्रधान प्रिं. जे.पी. शूर एवं मंत्री प्रि. डॉ. नीलम कामरा जी की अध्यक्षता में करवाए गए। कार्यक्रम का शुभारंभ वैदिक यज्ञ से हुआ। इसके उपरांत माननीय मुख्यातिथि द्वारा ओ३म् ध्वज फहराया गया तथा आर्य युवा समाज पंजाब, एवं एम.के. डी.ए.वी. अटारी के विद्यार्थियों ने गीत प्रस्तुति द्वारा समाज और राष्ट्र में परिवर्तन लाने का प्रण लिया। विभिन्न डी.ए.वी. स्कूलों के विद्यार्थियों द्वारा महात्मा हंसराज जी के जीवन को दर्शाती हुई झाँकियाँ प्रस्तुत की गईं।

उर्वी सभागार में डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा पवित्र मंत्रों के उच्चारण के साथ दीप प्रज्ज्वलन से समारोह का प्रारंभ किया गया। डी.ए.वी.

इंटरनैशनल स्कूल के विद्यार्थियों द्वारा डी.ए.वी. गान, एवं बी.बी.के. डी.ए.वी. कॉलेज फॉर विमेन के संगीत विभाग के अध्यापक श्री विजय महक एवं छात्राओं द्वारा स्वागत गीत और भजन प्रस्तुत किया गया। एम.के. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल अटारी द्वारा महात्मा हंसराज जी के महान व्यक्तित्व एवं उनके आर्य समाज के उत्थान में दिए योगदान का नाट्य मंचन द्वारा दर्शाया गया।

उपसभा पंजाब के प्रधान प्रिं. जे.पी. शूर ने मुख्यातिथि एवं अन्य अतिथिगणों का अभिनंदन करते हुए अपने उद्बोधन में कहा कि हम सब भाग्यशाली हैं जिन्हें आर्य समाज की सेवा का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। विभिन्न आर्य समाज संस्थाओं द्वारा समय–समय पर देश और समाज के कल्याण हेतु प्रोजैक्ट बूँद, रक्त दान शिविर, असहाय वर्ग की सहायता, नैतिक मूल्यों की शिक्षा जैसी गतिविधियों का उल्लेख किया। आज महात्मा हंसराज जी जैसे त्यागी, सेवाभावी, महानुभाव की पुण्यतिथि को समर्पित भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है ताकि सभी उनके जीवन से प्रेरणा लेकर उनके पदचिह्नों पर चल सकें।

डॉ. पूनम सूरी जी ने डी.ए.वी. रैड क्रॉस के दिव्यांग बच्चों के स्कूल द्वारा लिखित सूचना पत्र का विमोचन एवं स्वामी चैतन्य मुनि जी की पुस्तक का लोकार्पण मुख्यातिथि द्वारा किया गया। इस अवसर पर समाज कल्याण हेतु असहाय वर्ग की महिलाओं को 21 सिलाई मशीनें वितरित की गई।

स्वामी चैतन्य मुनि जी ने अपने आशीषवचनों द्वारा सभी आर्यों को अपने अंदर झाँकने और महात्मा हंसराज जी की तरह त्यागशील बनने की प्रेरणा दीं। उपसभा पंजाब की मंत्री प्रिं. डॉ. नीलम कामरा जी ने आए हुए अतिथिगणों के प्रति आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ से हुआ तदुपरान्त ऋषि लंगर का आयोजन किया गया।

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – पूनम सूरी

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार, 25 नवम्बर 2018 से 01 दिसम्बर 2018

समित्पाणि शिष्य के उद्गार

● डॉ. रामनाथ वेदालंकार

एतास्ते अग्ने समिधः, त्वमिद्धः समिद् भव।
आयुरस्मासु धेहि, अमृतत्वमाचार्याय।।

ऋषिः **ब्रह्मा**। देवता **अग्निः** छन्दः **अनुष्टुप्**।

● **(अग्ने)** हे यज्ञाग्नि! **(एताः)** ये **(ते)** तेरे लिए **(समिधः)** समिधाएँ [हैं], [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [इनसे] **(त्वं)** तू **(इत्)** निश्चय ही **(सम् इद्धः)** संदीप्त **(भव)** हो। **(अस्मासु)** हम [ब्रह्मचारियों] में **(आयुः)** जीवन, [और] **आचार्याय** (आचार्य) के लिए **(अमृतत्वम्)** अमरत्व **(धेहि)** प्रदान कर।

● मैं समित्पाणि होकर आचार्य के समीप उपनीत होने तथा विद्याध्ययन करने आया हूँ। अपने हाथ में मैं समिधायें इस निमित्त लाया हूँ कि इनसे मैं अग्निहोत्र करूँगा, समिधाओं को एक-एक कर अग्नि में आहुति दूंगा।

हे यज्ञाग्नि! ये तेरे लिए समिधायें हैं, इनसे तू समिद्ध हो, सम्यक् प्रकार से प्रदीप्त हो। देखो, ये शुष्क समिधायें, जो सर्वथा निस्तेज थीं, अग्नि में पड़कर प्रज्ज्वलित हो उठी हैं। ऐसे ही मुझे भी आचार्य-रूप अग्नि का ईंधन बनकर ज्ञान एवं सत्कर्मों से प्रज्ज्वलित होना है। मैं निपट अबोध-अज्ञानी बालक अप्रज्ज्वलित समिधाओं के समान ही निस्तेज हूँ, आचार्याधीन गुरुकुल-वास करके मुझे ज्ञान की ज्वालाओं से प्रदीप्त होना है।

आचार्य और ब्रह्मचारियों के मध्य में जलनेवाली हे यज्ञाग्नि! तू हम ब्रह्मचारियों को आयु प्रदान कर, हमारे अन्दर जीवन निहित कर। हम यही नहीं जानते कि इस संसार में किसलिए आये हैं और हमें कहाँ जाना है तथा जीवन किस प्रकार व्यतीत करना है। जीवन जीने की कला का बोध तू हमें करा। हे अग्नि! तू गुरुकुल की गुरु-शिष्य परम्परा का उज्ज्वल प्रतीक है। जो समिधाओं का और तेरा सम्बन्ध है, वही घनिष्ठ सम्बन्ध गुरुकुल में गुरु और शिष्यों का है। गुरुकुल के व्रतपालन, गुरुकुल की दिनचर्या, गुरुकुल के ज्ञानाग्नि-समिन्धन, गुरुकुल की कर्मपरायणता, गुरुकुल की तपस्या, गुरुकुल के संयम, गुरुकुल के योगानुष्ठान आदि सबका तू प्रतीक है। हे व्रतपति अग्नि! तुझमें समिधायें डालते हुए हम इन समस्त भावनाओं को अपने हृदय में धारण करते हैं।

हे गुरुकुलीय अग्निहोत्र की अग्नि! जहाँ तू हमें जीवन प्रदान करेगी, वहाँ हमारे आचार्य को अमृतत्व प्रदान कर। हम ही अपने आचार्य को मार सकते या अमर कर सकते हैं। हम तुझ अग्नि में तपकर ऐसे जीवन के धनी बनें कि हमसे आचार्य की कीर्ति चारों ओर फैले। जब कोई हमें गुणी और सत्कर्मनिष्ठ देखकर पूछेगा कि ये किस आचार्य के शिष्य हैं, तब हमारे आचार्य का नाम अमर होगा। हम यदि आचार्य के नाम को अमर करने में किंचिन्मात्र भी कारण बन सकेंगे, तो हम अपने को धन्य समझेंगे। हे गुरुकुल के अग्नि! तुम्हारी जय हो, हे गुरुकुल के पुण्यश्लोक आचार्य! तुम्हारी जय हो।

❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

भगवान शंकर और दयानन्द

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में स्वामीजी ने बताया 'शम' की सम्पत्ति को प्राप्त करने का चौथा साधन है प्राणायाम। चार प्रकार के प्राणायाम हैं- रेचक , तब बाहर का कुम्भक , तब पूरक , तब अन्दर का कुम्भक । 'शम' के पश्चात् दूसरी सम्पत्ति है 'दम' अर्थात् इन्द्रियों का दमन, उन्हें वश में रखना। इन्द्रियाँ हैं दो प्रकार की। एक वे जो बाहर का ज्ञान हमारे पास लाती हैं, दूसरी वे जिनसे हम कर्म करते हैं।

'दम' के पश्चात् तीसरी सम्पत्ति है - 'तितिक्षा'-सहन करने की शक्ति। शोक हो या रोग, दुःख हो या क्लेश, संकट हो या आपत्ति, सबको सहन करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाना। चौथी सम्पत्ति का नाम है- 'उपरति'। इसका अर्थ है दुष्ट व्यक्तियों के संग से बचना। दुष्ट को सुधारने का प्रयत्न करना अवश्य। यदि वह सुधर नहीं पाता तो उससे परे हट जाना, उसके संग को त्याग देना। पाँचवीं सम्पत्ति है 'श्रद्धा', जिसके बिना कोई कार्य नहीं बनता। छठी सम्पत्ति है 'समाधान'- मन को बाहर की ओर से हटाकर अन्दर की ओर एकाग्र कर देना। यह है 'षट् सम्पत्ति'।

अब आगे ...

चौथा दिन

मेरी प्यारी माताश्री तथा सज्जनों!

ब्रह्म क्या है? किस प्रकार इसको प्राप्त किया जाता है? किस प्रकार उसकी गवेषणा की जाती है? इनकी बात करने से पूर्व जिज्ञासु में चार बातों का होना आवश्यक है। इनमें से तीसरे गुण षट् सम्पत्ति का अर्थ है छः प्रकार की सम्पत्ति। पहली सम्पत्ति है शम, दूसरी दम, तीसरी तितिक्षा, चौथी उपरति, पाँचवीं श्रद्धा और छठी समाधान। शम और दम की बात तो पर्याप्त विस्तार से आपको बता चुका। तितिक्षा का अर्थ है सहन करने की शक्ति-शारीरिक और मानसिक रूप से प्रत्येक बात को सहन करना। सहनशक्ति समाप्त हो जाय तो कितना अनर्थ होता है, यह मिस्र में देखिये। मिस्र ने स्वेज को अपने अधिकार में कर लिया। बरतानिया का स्वार्थ इससे सहन नहीं कर सका। अशान्ति की आग जल उठी। संसार की भाँति परिवारों में भी सहनशक्ति न होने के कारण आपत्ति आती है। आपत्ति से बचने का सीधा मार्ग यह है कि केवल स्वयं मीठा बोलो। अगर दूसरे कड़वा बोलें तो उसे भी सहन करो। न केवल स्वयं ठीक मार्ग पर चलो, अपितु दूसरे यदि उल्टे मार्ग पर भी चलें तो उन्हें सहन करो। नहीं करोगे तो पहले क्रोध जागेगा, फिर दुःख जाग उठेगा। इसी प्रकार उपरति की महिमा को मैंने बताया। उपरति का अर्थ है बुरी संगत का त्याग। संगत का कितना प्रभाव होता है, यह इस बात से देखिये कि यमुना नदी आपके समीप बहती है। उसका पानी आपके क्षेत्रों और उद्यानों में पहुँचता है। जो पानी आम के वृक्ष की जड़ में जाता है, वह मधु की भाँति मीठा हो जाता है; जो मिर्च के पौधे की जड़ में होता है, वह इतना तीखा हो जाता है कि उसे चखते ही लोग तड़प उठते हैं। यमुना का पानी तो एक है, संगत के कारण एक स्थान पर वह एक वस्तु बनाता है, दूसरे स्थान पर दूसरी वस्तु। संगत के प्रभाव से पानी की यह दशा होती है, तो मनुष्य की क्यों न होगी? विद्वान् लोग कहते हैं, मनुष्य अपनी संगत से पहचाना जाता है। मैं कहता हूँ संगत मनुष्य को बनाती है। अतः सौ कार्य छोड़कर भी सत्संग में सम्मिलित होना चाहिये। सहस्त्र कष्ट होने पर भी बुरी संगत से दूर रहने का प्रयत्न करना चाहिये। इसी प्रकार श्रद्धा के सम्बन्ध में बताया कि किस प्रकार वह मनुष्य का बेड़ा पार करती है। आज की सभ्यता ने सबसे बड़ा पाप किया यह कि लोगों की श्रद्धा को समाप्त कर डाला; प्रत्येक बात में तर्क करने और युक्ति देने की रीति उत्पन्न कर दी। शास्त्रार्थ बहुत करते हैं हम परन्तु किसी परिणाम पर नहीं पहुँच पाते। मैं यह नहीं कहता कि शास्त्रार्थ नहीं करने चाहिएँ। सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने के लिए बुद्धि से अवश्य कार्य लेना चाहिए, परन्तु कहीं पहुँचना भी तो चाहिये। केवल शास्त्रार्थ के लिए शास्त्रार्थ करते रहना क्या हुआ? जो व्यक्ति युक्ति लड़ाने के लिए युक्ति लड़ाते हैं वेद उन्हें जल्पी कहता है।

जल्पी क्या करते हैं, इसे समझने के लिए एक कहानी सुनिये। एक थे पति और पत्नी। नया विवाह हुआ। अलग रहने के लिए एक मकान उन्होंने किराये पर लिया। एक सेठ साहब का मकान था। वह नीचे के भाग में स्वयं रहते थे, ऊपर के भाग में यह पति और पत्नी। अपने मकान को उन्होंने कुर्सियों और कौचों से सजाया, मेजों और बत्तियों से सजाया, पर्दों और कालीनों से सजाया। बहुत प्यार से रहते थे। एक दिन सेठ ने सुना कि वे

शेष पृष्ठ 07 पर ☞

पण्डित श्रीगंगाप्रसाद उपाध्याय

(व्यक्तित्व और कृतित्व)

● स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती

*[आर्यसमाज के जिन मनीषियों ने आर्यसमाज की सेवा और साहित्य–साधना में अपना जीवन होम कर दिया है उन विभूतियों में महत्त्वपूर्ण स्थान पर स्वनामधन्य पंडित श्री गंगाप्रसादजी उपाध्याय विराजमान हैं। स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिकधर्म और आर्य सिद्धान्तों की सरल–सरस तथा दार्शनिक व्याख्या किसी एक विद्वान् की रचना में देखना हो तो निस्संदेह उपाध्यायजी की किसी भी पुस्तक का आप अवलोकन कर सकते हैं। उपाध्यायजी के रचना–संसार की एक झलक उनके व्यक्तित्व की संक्षिप्त परिचायिका के साथ पठनीय है, जिसे स्वामी सत्यप्रकाशजी ने 1981 ई. में उपाध्यायजी की जन्मशती पर लिखा था, जो डॉ. रत्नकुमारी स्वाध्याय संस्थान, प्रयाग की ओर से प्रकाशित हुआ था तथा प्रकाशनविभाग की अध्यक्षा के नाम से छपा था। वस्तुतः इसको स्वामी जी ने ही लिखा था, यह हम भली–भाँति जानते हैं। मैंने कुछेक स्थलों पर लेखकीय–संगति के लिए स्वल्प संशोधन किया है, सर्वत्र ऐसा करना सम्भव नहीं था। अग्रिम पृष्ठों में श्री उपाध्यायजी का व्यक्तित्व और कृतित्व उन्हीं के सुयोग्य सुपुत्र **स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती** के शब्दों में प्रस्तुत है– **ज्वलन्त शास्त्री**]*

1. प्रारम्भ

आज हम जिस दिवंगत महान् विभूति की जन्मशती के लिये अग्रसर हैं उसके जीवन–विवरण को प्रस्तुत करने के लिये मैंने यह लेखनी उठाई है, उसके बारे में सबसे पहले मैं यह कहना चाहूँगा कि यह पुरुष 10 वर्ष की अल्पायु में ही अपने पैरों पर खड़े होने की प्रकृति बना चुका था। पिता श्री कुञ्ज बिहारी लालजी 28 वर्ष की आयु में ही दिवंगति को प्राप्त कर चुके थे। गंगाप्रसाद के साथ एक बहन और एक दस माह का भाई एवं निरक्षर माता गोबिन्दीजी थीं। परन्तु माता में चातुर्थ और आत्माभिमान था। उन्हीं माता के आत्मगौरव ने गंगाप्रसाद को आधारशिला दी। उनकी माता भी छोटी अवस्था में ही पितृहीन हो चुकी थीं और श्रीमती गोबिन्दीजी को भी उनकी माता ने ही पाला था। इस प्रकार **'जीवन चक्र'** में उपाध्यायजी लिखते हैं कि "मैं दो माताओं की एकाकिनी स्नेह–सरणी का प्रतिफल हूँ। अतः मेरी प्रकृति में मातृ प्रेम का अधिक पुट है। ऋग्वेद के एक मन्त्र का उदाहरण प्रस्तुत करते हैं कि **'वस्यां इन्द्रासि मे पितुः... माता च मे छदयथः समा...** (ऋग्वेद 8/1/6)' अर्थात् **हे ईश्वर! तू बाप से बड़ा है परन्तु माँ के बराबर है। छोटा बालक ईश्वर को नहीं जानता। उसकी कृपाओं का अनुमान नहीं कर सकता परन्तु माता के प्रेम का तो साक्षात्कार करता है। माता से बढ़कर उसके लिये कोई सत्ता नहीं। ईश्वर परोक्ष है, माता प्रत्यक्ष हैं। परोक्ष के समझने के लिये विकास चाहिये, तपस्या चाहिये। प्रत्यक्ष तो अविकसित से अविकसित प्राणी को भी उपलब्ध है।** अपने अनुभव से कहते हैं कि मेरी माता न केवल मेरी माता ही थी अपितु निर्माता भी। अपने पिता के पत्नीव्रत धर्म का उल्लेख करते हुये उन्होंने बताया कि एक बार अपने समवयस्कों के बीच बात करते हुये उनके पिता बोले "देखो भाई मैं कह सकता हूँ कि मैंने अभी तक परस्त्री का मुँह नहीं देखा।" बचपन का सुना वाक्य अर्थों का ज्ञान उस समय तो नहीं करता, परन्तु बाद को मालुम पड़ता है। परिवार की परम्परा और पैतृक अदृष्ट प्रभाव उनके भावी आचार की आधारशिला बन गया। ऐसा उन्होंने **'जीवनचक्र'** में लिखा। इस प्रकार एक दृढ़ संस्कारित माता–पिता का एक दृढ़ उदीयमान् पुत्र 6 सितम्बर सन् 1881 को उत्पन्न हुआ, जिनका नाम उन्होंने कृष्ण मुरारी लाल रखा। परन्तु पण्डितजी ने मकर राशि का विचार कर गंगाप्रसाद नाम रख कर आकाश की बात सोची। कई वर्ष तक कृष्णमुरारी ही नाम रहा। परन्तु जब अच्छे शब्द को बिगाड़ कर 'मोरारी' 'मोरारी' कहना लोगों ने प्रारम्भ किया तो उनके आत्म–सम्मान ने विरोध किया और पहला नाम स्वयं लिख लिया।

जैसा कि पहले ही बता चुके हैं कि पिता की मृत्यु तो आरम्भिक काल में ही हो चुकी थी, अतः कठोर जीवन प्रारम्भ से ही था। परन्तु माता विद्या–सम्बन्धी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करती थीं। यहाँ तक कि जब पैसा न होता तो जो कुछ जेवर था उसको गिरवी रख आती थीं। छह मील दूर पाठशाला में जा कर पढ़ते थे। 14 वर्ष की अल्पायु में ही मिडिल की परीक्षा में प्रान्त भर में चौथे नम्बर पर आये। फारसी, ऊर्दू, एवं हिन्दी भाषाओं का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। गणित और उर्दू में विशेष रुचि रखते थे। इसी काल में शिक्षा सम्बन्धी चक्र आते–जाते रहे। मामा आये, पटवारी की परीक्षा दिलाने के लिये। परन्तु परीक्षा में किसी कारण से बैठ नहीं पाये। अतः पटवारी होते–होते बच गये। पुनः अचानक एक अदृष्ट और आशाशून्य स्थान से सहायता आ गई। परिवार के एक ताऊ के लड़के थे, सहृदय थे, एक दिन एटा आये; गंगाप्रसादजी के बारे में जानना चाहते थे। पत्र आया कि "मेरी उत्कट इच्छा है कि तुम्हें पढ़ाऊँ। तुम मेरे पास चले आओ।" यह वाक्य उपाध्यायजी ने अपने सम्पूर्ण जीवन भर रखा। क्योंकि यह उनके जीवन काल का **परिवर्तन–बिन्दु** था। माताजी को राजी कर वह अंग्रेजी की पढ़ाई आरम्भ करने ताऊजी के पास चले गये। 18 वर्ष की आयु थी।

2. आर्यसमाज एवं सत्यार्थ प्रकाश से परिचय

बुलन्दशहर में ताऊजी के पास रहते थे। उन दिनों मूर्ति पूजा बड़े लगन से करते थे, रविवार को उपवास भी करते थे। ईश्वर के प्रति अनुराग के लक्षण प्रारम्भ से ही थे। अनुकरण मात्र से हनुमान चालीसा, अचलेश्वर महादेव का दर्शन आदि कृत्य धर्म के नाम पर किया करते थे। इन्हीं दिनों आपके कानों में स्वामी दयानन्द का नाम सुनाई पड़ा। कुछ पण्डे स्वामी दयानन्द के भक्त हो गये थे। एक बार गंगाप्रसाद जी अचलेश्वर महादेव के दर्शन के लिये जा रहे थे। रास्ते में उनके कुछ पण्डे साथियों ने उनकी हँसी उड़ाई। कुछ विचार शक्ति जागृत होने लगी। हर काम, हर दिशा में तर्क–वितर्क की प्रधानता होती। सच्चाई मालुम करने के लिये 'सत्यार्थ प्रकाश' भी मँगाया। **सत्य की खोज कर विचारों की ऊपापोह में संजोया व्यक्तित्व आर्यसमाज की ओर झुक जाता है सो झुक गया और गति का कोण बदल गया।** कुछ दृढ़ साथियों के साथ आपका जीवन दृढ़तर होता गया। सच्चाई से प्रेम होता गया, उसी की सुरक्षा के लिये वकालत से घृणा हो गई और धन की इच्छा धर्म के भाव से गिर गई। कठोर जीवनयापन करने की आदत सी बन चुकी थी, अतः अध्ययन जारी किया। अलीगढ़ में वैदिकाश्रम में वैदिक विद्वान् बनने की लालसा से गये। इन्हीं दिनों विवाह की बात भी पक्की हो गयी। घर वालों के अत्यधिक रुष्ट हो जाने के कारण एवं लड़की के पिता के दबाव से न चाहते हुये भी पौराणिक रीति से विवाह करना पड़ा। परन्तु विवाह के दो–तीन दिनों बाद ही (जैसी की उस समय की प्रथा थी) अलीगढ़ वैदिकाश्रम पुनः आ गये। आपने आश्रम में बालार्य सभा खोली। श्री रोशनसिंह जी प्रधान बने एवं आप मंत्री। साप्ताहिक उत्सवों में व्याख्यान देना भी यहीं से सीखा। यहीं पर पं. लेखरामजी आर्य मुसाफिर की **तकजीव बुराहीन अहमदिया, नुसखा खब्त अहमदिया,** पं. इन्द्रमणि की **इन्द्रबज्रा** और **सौलतुलू हिन्द,** एक पादरी की लिखी **उम्महातुल मौमिनीन,** प्रोफेसर मैक्समूलर की **इण्डिया ह्वाट कैन इट टीच अस** आदि पुस्तकें पढ़ डाली थीं। **अष्टाध्यायी** का भी थोड़ा–सा भाग रटा था।

आप विद्वान् के साथ–साथ आत्म–धनी भी यहीं से बने। दाँव–पेंच से आई अपनी सम्पत्ति भी स्वीकार नहीं करते थे और अगर दूसरे की सम्पत्ति कर्मचारियों की लापरवाही से कानूनी तौर पर मिल भी गई तो उसे हाथ लगाते ही नहीं थे। तुरन्त वापस कर देते थे। इसका श्रेय आप सत्यार्थ प्रकाश एवं बाबू छोटेलालजी भार्गव को जो अलीगढ़ के जोशीले आर्य नेता थे उन्हें देते थे। इसका दृष्टान्त **जीवन–चक्र** में है। कई बागों के मुकद्मे के सिलसिले में यह बात पूर्णरूपेण सिद्ध हो जाती है। जो सन् 1907 या 1908 की बात होगी। गृहस्थ जीवन था। दो बेटे पैदा हो चुके थे। आर्थिक कठिनाइयाँ भी थीं। परन्तु आदर्श एवं उद्देश्य सुदृढ़ बना रहा।

क्रमशः

प्रस्तुति डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
अमेठी, उ.प्र.

सभी दुःखों से मुक्ति व आनन्दमय मोक्ष की प्राप्ति के चार साधन

● मनमोहन कुमार आर्य

मनुष्य को अपने पूर्वजन्म के शुभ कर्मो के परिणामस्वरूप परमात्मा से यह श्रेष्ठ चोला व शरीर मिला है। सब प्राणियों से मनुष्य का शरीर श्रेष्ठ होने पर भी यह प्रायः सारा जीवन दुःख व क्लेशों से घिरा रहता है। दूसरों लोगों को देख कर यह अपनी रुचि व सामर्थ्यानुसार विद्या प्राप्त कर धनोपार्जन एवं सुख–सुविधा की वस्तुओं का संग्रह व उनके भोग को ही सुख व परम–लक्ष्य मान लेता है। इसे यह पता नहीं होता कि यह सारी वस्तुयें जिन्हें हम अपने सुख के लिये प्राप्त करते हैं, उनमें दुःख भी मिला रहता है। **दुःखों से निवृत्ति का उपाय आध्यात्मिक ज्ञान व उसके अनुरूप कर्म करना है।** ज्ञान दो प्रकार का है जिसे आध्यात्मिक एवं सांसारिक ज्ञान कह सकते हैं। आध्यात्मिक ज्ञान से भौतिक पदार्थों की अल्प मात्रा में उपलब्धता होने पर भी हम सुखी रह सकते हैं। दूसरी ओर सांसारिक ज्ञान हमें सुखा भोग के प्रति अतृप्त बना देता है। हम आज के संसार में देखते हैं कि मनुष्य बिजीनेस आदि अनेक कार्यों को करके रात–दिन धनोपार्जन करने में व्यस्त रहते हैं। उनके पास अपने को स्वस्थ रखने के लिये भी समय नहीं होता। सोकर उठते ही वह अपने कुछ अत्यावश्यक दैनन्दिन कार्य करते हैं और धनोपार्जन के कार्यों में लग जाते हैं। रात्रि शयन से पूर्व तक भोजन आदि के लिये कुछ समय निकाल कर वह सारा समय धन कमाने व सुख–सुविधा की वस्तुयें एकत्रित करने में लगाते हैं। ऐसा करते हुए ही उसकी आयु व्यतीत होती जाती है और मृत्यु आ जाती है। क्या इसी का नाम मनुष्य जीवन है? ऐसा कदापि नहीं हो सकता। **हमें अपने शास्त्रों को पढ़कर अपने विवेक से आत्मा व मनुष्य जीवन के उद्देश्य को जानना चाहिये और अक्षय सुख की प्राप्ति के लिये प्रयत्न करना चाहिये।**

मनुष्य केवल भौतिक जड़ पदार्थों से बना हुआ शरीर ही नहीं है अपितु इस शरीर में एक दिव्य, अनादि, नित्य, अमर, सूक्ष्म व एकदेशी चेतन जीवात्मा है। मनुष्य जीवन को मोक्ष का द्वार कहा जाता है और वस्तुतः यह बात ठीक भी है। मोक्ष का अर्थ दुःखों से पूर्ण निवृत्ति होना माना जाता है। मोक्ष की परिभाषा यह है कि दुःखों से पूरी तरह से छूट जाना मोक्ष है। मोक्ष की चर्चा होती है तो हमें अपने जीवन के दुःखों पर भी ध्यान देना होगा। आत्मा को जिन कार्यों से वर्तमान या भविष्य में शारीरिक व आत्मिक पीड़ा, कष्ट व अप्रिय अनुभूतियाँ होती हैं, उसे दुःख कह सकते हैं। शरीर में ज्वर व उदर शूल आदि अनेक रोगों से भी मनुष्य को दुःख प्राप्त होता है। संसार में परमात्मा ने अनेक प्रकार के प्राणियों को बनाया है। इनसे भी हमें अनेक बार दुःख मिलने की सम्भावना होती है। संसार के सबसे महान् व्याकरणाचार्य ऋषि पाणिनी के बारे में कहा जाता है कि एक शेर ने उन्हें खा लिया था, जिससे उनकी मृत्यु हुई थी। ऐसी घटनायें मृतक व उनके सम्बन्धियों को दुःख देती हैं। तीसरे प्रकार के दुःख वह होते हैं जो प्राकृतिक आपदा यथा बाढ़, अति वृष्टि, सूखा, भूकम्प आदि कारणों से होते हैं। मनुष्य जीवन भर इन्हीं दुःखों में फंसा रहता है। आजकल प्रदूषण व मिलावट से भी अनेक प्रकार के रोग आदि हो रहे हैं। वायु, जल, अन्न, वनस्पतियाँ एवं ओषधियाँ सभी प्रदूषित हैं। मनुष्य की आयु, जो वैदिक काल में 100 से 300 व 400 वर्ष तक की होती थी, आजकल प्रायः 55 से 80 वर्ष के बीच ही समाप्त हो जाती है। अतः मनुष्यों को किसी प्रकार का कैसा भी दुःख आने से पूर्व उसके विषय में चिन्तन करके उसके निवारण के लिये प्रयास करना चाहिये। वैदिक शास्त्रों में बार–बार के जन्म–मरण तथा सभी दुःखों से मुक्ति के लिये ही पंचमहायज्ञों, स्वाध्याय, आसन, प्राणायाम, ध्यान, योग, सन्ध्या, यज्ञ व सदाचारण आदि का विधान किया गया है।

मोक्ष वा दुःखों की स्थाई निवृत्ति के लिये मनुष्यों को किन साधनों को अपने जीवन में करना चाहिये, इसका उल्लेख ऋषि दयानन्द जी ने सत्यार्थप्रकाश के नवम् समुल्लास में किया है। वह अपने ग्रन्थ में चार प्रकार के साधनों का उल्लेख करते हैं। **इन चार साधनों के नाम विवेक, वैराग्य, षट्क सम्पत्ति तथा मुमुक्षत्व हैं।** मुक्ति वा मोक्ष चाहने वालों को मिथ्याभाषणादि पाप कर्मों को छोड़कर सुख रूप फल को देने वाले सत्यभाषण ादि धर्माचरण का सेवन अवश्य करना चाहिये। मनुष्य को अधर्म का भी सर्वथा त्याग कर धर्म का पालन करना चाहिये। **हमें हर क्षण यह स्मरण रखना चाहिये कि दुःख का मूल कारण पापाचरण तथा सुख का मूल कारण धर्माचरण है।** मोक्ष के चार साधनों का हम क्रमानुसार सत्यार्थप्रकाश के आधार पर उल्लेख कर रहे हैं।

मनुष्य को सत्पुरुषों के संग से विवेक अर्थात सत्यासत्य, धर्माधर्म, कर्तव्याकर्तव्य का निश्चय अवश्य करना चाहिये। इन्हें पृथक्–पृथक् यथार्थ रूप में जानना चाहिये। मानव शरीर अर्थात् इसके पंच कोषों का हमें विवेचन करना चाहिये। प्रथम **'अन्नमय कोष'** जो त्वचा से लेकर अस्थिपर्यन्त का समुदाय पृथिवीमय है। दूसरा **'प्राणमय कोष'** जिस में **'प्राण'** अर्थात् जो भीतर से बाहर आता, 'अपान' जो बाहर से भीतर जाता, 'समान' जो नाभिस्थ होकर सर्वत्र शरीर में रस पहुँचाता, जिस से सब शरीर में चेष्टा आदि कर्म जीव करता है। तीसरा **'मनोमय कोष'** जिस में मन के साथ अहंकार, वाक्, पाद, पाणि, पायु और उपस्थ पाँच कर्म–इन्द्रियाँ हैं। चौथा **'विज्ञानमय कोष'** जिस में बुद्धि, चित्त, श्रोत्र, त्वचा, नेत्र, जिह्वा और नासिका ये पांच ज्ञान–इन्द्रियां जिन से जीव ज्ञानादि व्यवहार करता है। पाँचवाँ **'आनन्दमय कोश'** जिस में प्रीति प्रसन्नता, न्यून आनन्द, अधिकानन्द, आनन्द और आधार कारण रूप प्रकृति है। ये पाँच कोष कहलाते हैं। इन्हीं से जीव सब प्रकार के कर्म, उपासना और ज्ञानादि व्यवहारों को करता है।

आत्मा और शरीर की तीन अवस्थायें होती हैं। एक **'जागृत'**, दूसरी **'स्वप्न'** और तीसरी **'सुषुप्ति'** अवस्था। तीन शरीर हैं– एक **'स्थूल'** जो यह दीखता है। दूसरा पाँच प्राण, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच सूक्ष्म भूत, मन तथा बुद्धि, इन सतरह तत्वों का समुदाय **'सूक्ष्म शरीर'** कहाता है। **यह सूक्ष्म शरीर जन्म–मरणादि में भी जीव के साथ रहता है।** इस के दो भेद हैं–एक भौतिक अर्थात् जो सूक्ष्म भूतों के अंशों से बना है। दूसरा स्वाभाविक जो जीव के स्वाभाविक गुण रूप है। यह दूसरा अभौतिक शरीर मुक्ति में भी रहता है। (यह अभौतिक शरीर जीवात्मा व इसके स्वाभाविक गुणों को कहा गया है जो सृष्टि बनने से पूर्व व प्रलय के बाद भी आत्मा के साथ रहते हैं।) **इसी से जीव मुक्ति में सुख को भोगता है।** तीसरा कारण शरीर जिस में सुषुप्ति अर्थात् गाढ़ निन्द्रा होती है। वह प्रकृति रूप होने से सर्वत्र विभु और सब जीवों के लिए एक है। **चौथा तुरीय शरीर वह कहाता है जिस में समाधि से शरीर का पराक्रम मुक्ति में भी यथावत् सहायक रहता है।**

इन सब पांच कोशों तथा तीन अवस्थाओं से जीव पृथक है। जब मृत्यु होता है तब सब कोई कहते हैं कि जीव निकल गया। यहीं जीव सब का प्रेरक, सब का धर्त्ता, साक्षीकर्त्ता तथा भोक्ता कहाता है। जो कोई ऐसा कहता है कि जीव कर्त्ता व भोक्ता नहीं है तो जानों वह व्यक्ति अज्ञानी व अविवेकी है क्योंकि बिना जीव के, जो ये सब जड़ पदार्थ हैं, इन को सुख–दुःख का भोग वा पाप–पुण्य कर्तृव्य कभी नहीं हो सकता। हाँ, इन के सम्बन्ध से जीव पाप–पुण्यों का कर्त्ता और सुख–दुःखों का भोक्ता है। जब इन्द्रियाँ अपने अपने विषयों में, मन इन्द्रियों के साथ और आत्मा मन के साथ युक्त होकर प्राणों को प्रेरणा करके अच्छे वा बुरे कर्मों में लगाता है तभी वह बहिर्मुख हो जाता है। उसी समय अच्छे कर्मों को करने में भीतर से आनन्द, उत्साह, निर्भयता और बुरे कर्मों में भय, शंका, लज्जा उत्पन्न होती है। यह अन्तर्यामी परमात्मा की शिक्षा है। जो कोई इस शिक्षा के अनुकूल वर्त्तता है वही मुक्तिजन्य सुखों को प्राप्त होता है और जो विपरीत वर्त्तता है वह बन्धजन्य दुःख भोगता है।

मोक्ष प्राप्ति का दूसरा साधन वैराग्य है। विवेक से जो सत्यासत्य को जाना हो, उसमें से सत्याचरण का ग्रहण और असत्याचरण का त्याग करना विवेक है। जो पृथिवी से लेकर परमेश्वर पर्यन्त पदार्थो के गुण, कर्म, स्वभाव को जानकर उस की आज्ञा पालन और उपासना में तत्पर होना है, उस से विरुद्ध न चलना तथा सृष्टि से उपकार लेना वैराग्य कहलता है।

इसके पश्चात तीसरा साधन – **'षट्क सम्पत्ति'** अर्थात् 6 प्रकार के कर्म करना– एक **'शम'** जिस से अपने आत्मा और अन्तःकरण को अधर्माचरण से हटाकर धर्माचरण में प्रवृत्त रखना। दूसरा **'दम'** जिस से श्रोत्रादि इन्द्रियों और शरीर को व्यभिचारादि बुरे कर्मों से हटा कर जितेन्द्रियत्वादि शुभ कर्मों में

शेष पृष्ठ 08 पर

जीवन की रूपरेखा

● भद्रसेन

जिस बिछुड़ने वाले की याद में हम यहाँ एकत्रित हुए हैं। उसका भी जीवन हमारी तरह ही शरीर–इन्द्रिय–मन और आत्मा का मेल रूप ही था और इन के मेल का नाम ही जन्म, जीवन है। सभी की आत्मा का अपने शरीर आदि से मेल ईश्वर की व्यवस्था से अपने–अपने कर्मों के अनुसार ही होता है। सबकी आत्मा जहाँ अजर–अमर है और मन–इन्द्रिय सूक्ष्म तथा शक्ति रूप में हैं, वहाँ शरीर पाँच भौतिक है, जो कि पृथिवी–जल–अग्नि–वायु–आकाश से बना हुआ होने के कारण परिवर्तनशील है। परिवर्तनशीलता के कारण एक दिन शरीर हमारी आँखों से ओझल हो जाता है, जिस को किसी की मौत कहते हैं। कई बार दुर्घटना, रोग, बदले की कारवाई आदि के कारण भी जीर्ण–शीर्ण होने से पहले भी आत्मा अपने शरीर आदि से अलग हो जाता है। इसी को देहान्त, निधन, प्राणान्त, बिछुड़ जाना, चल बसना, मृत्यु भी कहा जाता है।

शोक संवेदना के अवसर पर किसी के भी मन में उभरने वाली भावनाओं, बातों को स्मरण कराते हुए ही यजुर्वेद के **'अश्वत्थे वो निषदनम्'**–मंत्र में कहा कि चलाय मान देह में तुम्हारा ठिकाना है अर्थात् दुनिया की दुनियावी चीजों को बर्तने वालो! तुम्हारे द्वारा बर्ते जाने वाली खाने–पीने–पहनने–बर्तने में आने वाली सारी चीजें पाँच भौतिक हैं। इन चीजों में अपने–अपने भूतों के अनुपात के अनुरूप परिवर्तन आता रहता है। इस तरह प्रत्येक वस्तु एक दिन हमारी आँखों से ओझल हो जाती है और वह तब अपना काम करना बन्द कर देती है।

आगे मन्त्र कहता है – **पर्णे वो वसतिष्कृता** अर्थात् पत्ते जैसे देह में तुम्हारा बसेरा है, तभी तो केवल बर्तने की वस्तुएँ ही नहीं, अपितु पाँच भूतों से बना यह देह भी एक दिन पत्ते की तरह डाल से बिछुड़ा दिखाई देता है। अतः **गोभाज इत्किलासथ** अर्थात् गो रूपी सम्पति बनो और संभलो क्योंकि हमारे शास्त्र पशु विशेष को जहाँ गौ कहते हैं, वहाँ हमारी आँख आदि इन्द्रियों, पृथिवी, जल, सूर्य, उसकी किरणें, चन्द्र और हमारी बुद्धि, समझ का नाम भी गौ है। इस मानव देह में तुम्हें एक दुर्लभ अवसर मिला है, अतः **यत्सनव थ पुरुषम्** अर्थात् अपने आपा के सभी तत्त्वों अर्थात् शरीर–इन्द्रिय–मन–आत्मा का पूर्ण विकास कर पूर्णता को प्राप्त करो। जिससे बाद में पछतावा न हो कि हमने इस–उस का अभी कोई फायदा नहीं उठाया।

हमारा, अपना–आपा जीवन इस समय शरीर–इन्द्रिय–मन–आत्मा का मेल रूप ही है। तभी तो कठोपनिषद् के ऋषि ने कहा है– **आत्मेन्द्रिय मनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः** और इसी का समर्थन चरक में भी है। इस मेल से ही हमारे संसारी और आध्यात्मिक कार्य सिरे चढ़ते हैं। अर्थात् हमारा हर कार्य आत्मा और शरीर आदि के मेल से ही होता है। अतः किसी के जीवन की पूर्णता, जीवन के हर क्षेत्र की सफलता आत्मा–मन–शरीर के विकास पर ही निर्भर है। तभी तो मनुस्मृति के **अद्भिर्गात्राणि शुध्यन्ति, मनः सत्येन शुध्यति। विघातपोभ्यां भूतात्मा बुद्धिर्ज्ञानेन शुध्यति।।** 5,109 श्लोक में इन सभी को निखारने वाले तत्त्वों की चर्चा की है। इसीलिए हम देखते हैं कि किसी का शरीर जितान स्वस्थ, मन सन्तुष्ट, बुद्धि प्रवीण और आत्मा आत्मिक बल से सम्पन्न होती है। वह उतना ही अधिक संसारी जीवन में सफल तथा धार्मिक क्षेत्र में भी सार्थक सिद्ध होता है।

हाँ, आयुर्वेद के मान्यग्रन्थ चरक में आयु जीवित–नित्यग–धारि–अनुबन्ध शब्दों को एक ही बात को कहने वाले पर्यायवाची माना है। इन शब्दों की गहराई में जाने पर जीवन का एक विस्तृत रूप हमारे सामने आता है। अतः जीवन की पूर्णता के लिए हमें इन सभी पहलुओं पर पूर्ण ध्यान देना चाहिए।

भारतीय परम्परा में जहाँ ईशभक्ति से मोक्ष प्राप्ति, ईश्वर दर्शन में मानव जीवन की पूर्णता मानी गई है, वहाँ किसी के काम आने, परोपकार अर्थात् पारस्परिक सम्बन्धों को सम्बन्ध के अनुरूप निभाने को भी जीवन की पूर्णता कहा जा सकता है, क्योंकि हमारे ये सम्बन्ध ईश्वर ने ही जोड़े हैं।

जैसे कि इस शोक के अवसर पर बिछुड़ी आत्मा से अपने–अपने सम्बन्ध को ध्यान में रखकर हम अपनी–अपनी संवेदना, सहानुभूति प्रकट करने के लिए बड़ी आत्मीयता के साथ यहाँ उपस्थित हुए हैं। क्योंकि हम अनुभव करते हैं कि सामाजिकता, अपनेपन के कारण जब कोई हार्दिक संवेदना प्रकट करता है तो ऐसा करने पर वियोग से विह्वल परिवार दुःख, कष्ट में अपने आप को अकेला अनुभव नहीं करता और इससे वे अपना दुःख, कष्ट कुछ हल्का हुआ–हुआ अनुभव करते हैं। वियोग विह्वल परिवार इस संवेदना प्रकटीकरण को अपना एक सहारा जहाँ अनुभव करता है, वहाँ आने वालों को मानसिक तुष्टि होती है।

इसके साथ नई पीढ़ी पर परिवार की परम्परा का जो नया दायित्व आया है। उसमें भी अपने–अपने सहयोग–सद्भाव की आस्था दर्शाने और परमपिता परमेश्वर से सामूहिक प्रार्थना करने के लिए भी यहाँ एकत्रित हुए हैं, कि वह परम् दयालु प्रभु इस परिवार को अपनी परिवार की परम्परा को पनपाने की शक्ति, मति, धृति प्रदान करे। इस प्रकार सामूहिक प्रार्थना, संवेदना से जहाँ यह परिवार सम्बल प्राप्त करता है, वहाँ आने वाले भी कुछ अच्छा ही अनुभव करते हैं।

जिस प्रकार इस अवसर के कर्तव्य को निभाकर हम अपने–अपने सम्बन्ध को चरितार्थ करते हैं। ऐसे ही संसारी जीवन के अन्य अवसरों पर भी सदा अपने सम्बन्धियों से अपने–अपने सम्बन्ध के अनुरूप अपने–अपने कर्तव्य को निभाकर हम अपने जीवन को सार्थक सिद्ध कर सकते हैं।

182 शालीमार नगर, होशियारपुर
मो. 9464064398

धैर्य

● नरेन्द्र आहूजा 'विवेक'

धैर्य धर्म का लक्षण और मनुष्य के जीवन का अत्यंत आवश्यक गुण है जिसके बिना सफलता प्राप्त नहीं की जा सकती। धैर्य सबसे बड़ी प्रार्थना है जिसके द्वारा जीवन के लक्ष्य का द्वार खुल जाता है। धैर्य ही लक्ष्य के द्वार की चाबी है। वेद भगवान ने भी अधीरता और क्रोध को त्याग कर धैर्यवान सहनशील बनने का आदेश देते हुए कहा **अहमस्मि महमानः**। अथर्व 12/1/54 अरे मैं तो अत्यंत धैर्यवान सहनशील हूँ। अत्यंत विपरीत या विषम परिस्थिति में भी सामंजस्य बैठाकर समभाव बनाकर मुस्कराते रहना ही धैर्यवान होना कहलाता है।

योगेश्वर कृष्ण ने विषाद में फँसे अर्जुन को गीता का ज्ञान देते समय भी योगियों के लिए स्थितप्रज्ञ होकर धैर्यवान होना एक आवश्यक लक्षण बताया है। जो सुख में इतराय नहीं विपत्ति में घबराय नहीं और प्रत्येक अनुकूल या प्रतिकूल परिस्थिति में समभाव बना रहकर उस स्थिति का सामना करे वही धैर्यवान जीवन में सफलता पा सकता है। जो व्यक्ति सुख के समय उसके अभिमान में इतरा गया उसका सुख क्षणिक होता है और यदि विपत्ति के समय घबरा गया तो वह मुसीबत पहाड़ बन जाती है और व्यक्ति उस कष्ट में टूट जाता है। इसीलिए महाराज मनु ने धर्म के लक्षण लिखते समय धैर्य को धर्म का लक्षण बताया और वेद भगवान ने भी धैर्यवान, सहनशील होने का आदेश दिया।

गुरु वशिष्ठ ने धैर्य का सुंदर उदाहरण देते हुए कहा "राज्याभिषेक के लिए बुलाये गए और वन के लिए विदा किए गए मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम के मुख के आकार में कोई अंतर नहीं देखा" इसे कहते हैं धैर्य। योगेश्वर कृष्ण पर कैसे–कैसे संकट आए कंस के अत्याचार, जरासन्ध के प्रहार, शिशुपाल के दुर्वचन परन्तु वह सच्चे योगी की भाँति सदैव शान्त भाव से मुस्कराते रहे। आधुनिक काल में आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द पर ईंट पत्थर फैंके गए, अनेकों बार विष दिया गया, लांछन लगाए गए परन्तु वह सब कुछ सहते हुए अत्यंत धैर्य के साथ मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे। शायद यही धैर्य ही इन सभी में वह समान गुण था जिसके कारण वह अपने जीवन में अपने लक्ष्य को पाने में सफल रहे और अपने कार्यों विचारों से अमर होकर हम सभी के लिए अनुकरणीय आदर्श स्थापित कर गए।

धैर्यवान सहनशील व्यक्ति के लिए जीवन में कुछ भी असंभव नहीं ऐसा कहते हुए नीति शास्त्र में सुंदर वर्णन किया है "जिसके ह्रदय में जल के समान शीतल समुद्र छोटी सी नदी सा मेरू पर्वत पत्थर के खंड समान, सिंह हिरण के समान, सर्प पुष्पों का हार और विष अमृत के समान हो जाता है। शांत रहने और धैर्य रखने से व्यक्ति हर कठिनाई पर विजय पा सकता है इसीलिए कहा गया अच्छे श्रोता बनो धैर्य से सुनो लेकिन करो वही जो तुम्हारा विवेक कहता है। धैर्य सब प्रसन्नताओं व शक्तियों का मूल तत्व है जिसके पास धैर्य संयम सहनशीलता है वह जो इच्छा करे प्राप्त कर सकता है। धैर्य को कमजोरी या मजबूरी समझने वाले मूर्ख होते हैं सहनशीलता तो वीरता का गुण है। अधीर जल्दबाज मनुष्य मुँह के बल गिर पड़ते हैं जबकि धैर्यवान सदा लक्ष्य को सफलता पूर्वक प्राप्त करते हैं। धैर्य संयम का रास्ता दर्द से भरा होता है परन्तु उसकी मंजिल सदैव सुखदायी होती है। धैर्य और संतुष्टि जीवन नौका की वह पतवारें हैं जो उसे भव सागर के हर भँवर से निकाल कर मंजिल तक ले जाती हैं। विचारों के कारण उपस्थित होने पर भी जिसके मन में विकार उत्पन्न नहीं होते वह धैर्यवान है। धैर्य और मेहनत से वह कुछ पाया जा सकता है जो शक्ति और शीघ्रता से नहीं मिल सकता। इसीलिए हम मनुष्यों को धर्म के लक्षण, वेद के आदेश और मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, योगेश्वर कृष्ण के जीवन से प्रेरणा लेकर धैर्य संयम सहनशीलता को अपने जीवन में धारण करके अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए।

602 जी. एच. 33, सैक्टर 20 पंचकूला
09467608686

वे मुझे गालियों की बौछार से क्यों बचा गये

● स्व. श्री बलराज भल्ला

जो सिख अमेरिका और कैनेडा से आये थे, वे धीरे–धीरे मुलतान से जाने लगे। आज एक और कल दो लाहौर जेल को सिखों की साज़िश में मिलाये जाने के लिए भेजे जाने लगे। इन लोगों को एक बार स्ट्राइक करने पर ही कनायत (सन्तोष) नहीं करनी पड़ी, बल्कि अपने जीवन और हकूकों को कायम रखने के लिए इन्हें गाहे–बगाहे लड़ना पड़ता। कभी तो जमादारों से हाथापाई इसलिए हो जाती कि वे लोग इनके खाने में शरीक होना चाहते और ये इन्कार कर देते। इस पर जमादार कई ढंगों से इनको दु:ख देना चाहते और ये खुल्लमखुल्ला मैदान में आ जाते। शायद कई पाठक इस बात को पढ़ कर हैरान हुए होंगे कि जिस जेल की रीति की ऐसी निंदा हो रही है, उसके खाने के लिए सरकारी सिपाही कैसे उत्सुक थे। इसके सम्बन्ध में केवल यह कह देना ही काफ़ी होगा कि सिखों की रोटी तो वार्डरों के घर की रोटी से बदरजह बेहतर थी, इसलिए उसका कहना ही क्या? कोई–कोई तो भूख के मारे लालची वार्डर मामूली कैदियों का खाना खा जाते थे। मुझे छह फुट लंबे होने के सबब तीन रोटियाँ मिला करती थीं और मैं डेढ़ व दो से अधिक न खा सकता था और कई बार अपनी जूठी दाल और रोटी एक वार्डर को खाने के लिए दे दिया करता था, जो उसके लिए मुझे कई बार कह दिया करता था। एक जमादार जेल में बैठ कर खाने में शर्माता था। मैंने कई बार उसे एक–दो रोटियाँ जेब में डाल कर बाहिर ले जाते देखा। ऐसी अवस्था में यदि जमादार लोग सिखों का हलवा खाने के लिए उत्सुक हो जाते थे, तो उसमें कोई विस्मय की बात नहीं। कभी–कभी इनका बाबुओं से गाली–गलौच हो जाता। वे इनको साधारण नौकरों की माफ़िक समझना चाहते, परन्तु ये आजाद देश की हवा खाये हुए ऐसी बातें कब सह सकते थे? अक्सर दो–चार हो जाते। हर एक द्वेष का मूल लालसा है, यहाँ भी यही बात थी। इनको केश धोने के लिए अंग्रेज़ी साबुन मिलता था। साबुन देने वाला बाबू समझता था, अगर दो सप्ताह के अन्दर एक चक्की (टिकिया) भी बचा ली जाय, तो घर का गुज़ारा चल जाएगा। सिख समझते थे अगर फालतू बच भी जाय, तो भी बाबू को देने की निस्बत कैदियों को दे देनी व कौओं को फ़ेंक देनी बेहतर है। वे एक व दो टिक्कियों के चले जाने से तो न घबराते थे, परन्तु उस डर से डरते थे जिस के पड़ जाने की बड़ी संभावना थी। अक्सर इन लोगों का टाकरा दारोगा से तो हुआ ही करता था। इतनी बड़ी रियासत, जिसकी सालाना आमदनी 80,000 से कम न थी– के मालिक को क्या परवाह थी कि दस–बीस ऐसे कैदियों से टैक्स मिलता है या नहीं, पर मुश्किल तो यह थी, वह भी इसी बात से घबराता और डरता था कि अगर इनकी रसद और कपड़ों में से कुछ न काटा, तो कहीं काटने की तरकीब ही न भूल जाए। साहिब बहादुर तो इन पर कैसे खुश रह सकते थे? अव्वल तो प्रत्येक गौरांग की मानसिक वृत्ति इस देश में आते ही ऐसी हो जाती है कि वह अपने आपको हर एक वस्तु का और प्राणी का, जिसे वह देखता है, मालिक ही समझने लग जाता है। फिर उस गौरांग की मानसिक वृत्ति का तो कहना ही क्या है, जो कुछ देर जेल में रह चुका हो– जहाँ एक दस रुपये का सिपाही भी अपने आपको 2000 दासों का मालिक समझता है। ये लोग एक ऐसे देश से आये थे, जहाँ पोलिश विजय से पहले सभ्यता का विचार सब से अधिक था। यह एक साहिब को 'गोरा' कह कर बुलाते व समझते थे। उनके मन में गौरांगदेव की उपासना का भाव तो लेश–मात्र भी न था। वे साहिब से ऐसे ही बोलते थे, जैसे एक मनुष्य मनुष्य से बोलता है और अभी तक इस देश की नरम आबो–हवा से नम्र होकर वे हर एक के आगे माथा रगड़ना न सीखे थे। इसलिए आप लोगों की साहिब से सदा खटपटी ही रहती थी। ऐसे हालात के अन्दर इनका जीवन सुखमय लड़ियों की एक जंज़ीर न था। एक बार सर माइकल ओडवायर भी इनको देखने के लिए आये। सब सिख चक्कर (सैण्ट्रल टावर) में जमा कर दिये गये और लाट साहिब ने स्वयं बीच में खड़े होकर एक लैक्चर दिया। लैक्चर क्या था, मैं नहीं कह सकता, कारण, मैंने सुना नहीं। इस उपदेश का असर इन पर क्या हुआ, यह इस बात से जाना जा सकता है कि लैक्चर के ठीक बाद ही पूछने पर जो दो–चार शब्द उनको याद रहे और उन्होंने मुझे बतलाये, ऐसे थे जो एक लाट के मुँह की शान की शोभा न थे। माइकल का लैक्चर ठेठ पंजाबी में था। उसके इन शब्दों ने ''तुसीं लोग जित्थे गये हो, उत्थे वह सूर ही जांदा है। तुसीं सूरां नूं याद रखना चाहीदा है कि सरकार दीआं बाँहवाँ बड़ीआँ लम्बीयाँ हैं, तुसीं उनां कोलों किते बच नहीं सकदे।'' अमेरिका से लौटे हुए सिखों के दिल पर इस लैक्चर ने क्या असर किया होगा, किसी सहृदय पाठक के लिए कहना कठिन है। मैं अभी तक विस्मित हूँ। वहाँ बलवा क्यों न हो गया? हो सकता है, उस रोज़ जेल का प्रबन्ध कड़ा था। यहाँ तक, मैंने इन सिखों को स्टडी किया है, मैंने देखा कि इनका दिल इनके दिमाग से ज़बरदस्त था। हाँ, इनके एक–दो बोल ऐसे थे, जो अपने दिमाग से अपने हृदय पर काबू रखते थे। जवाब तो इन लोगों ने भी भले–भले दिये, परन्तु ऐसे न थे, जो माइकल की आग को भड़का देते। इन लोगों के दिल और दिमाग की बाबत मुझे एक घटना याद आ गयी है, शायद वह पाठकों के लिए रुचिकर हो। ये लोग भी चक्कियों के अन्दर बन्द थे और रात को तीन–तीन घंटे के बाद पहरेदारों से जगाये जाते थे। एक दिन तीन–चार सिंहों ने जो मेरे निकट थे, इस बात का प्रण किया कि आज रात वे पहरेदार को तंग करने के लिए ''बोल जवान'' का जवाब न देंगे। मैं भी कई रोज़ से तंग था, मैंने भी प्रण कर लिया कि मैं भी मौन धारण करूँगा। दो सिंह मेरी दायीं ओर दो मेरी बायीं ओर रहते थे। नौ तो हँसते–खेलते बज गये। 12 बजे पहरेदार ने पहली कोठरी को आ खटकाया। पहले तो सिंह जी ने कोई उत्तर न दिया। दो चार मिनट के बाद पहरेदार ने तंग आकर दो चार गालियाँ सुना दीं। सिंह जी अपने क्रोध को न रोक सके। आपने एक के जवाब में दस सुनाईं। पहरेदार का काम बन गया। वह आगे चल पड़ा। सिंह जी को यह समझ में ही न आया कि चाहे वे गाली ही क्यों न दें, आखिर मौन तो टूट गया। दूसरी कोठड़ी एक साधारण कैदी की थी। तीसरी में भी वही हाल हुआ। थोड़ी देर के बाद सिंह जी ने गालियों का जवाब गालियों में देना शुरू कर दिया। अब मेरा दरवाज़ा खटकाया गया। मैंने कोई उत्तर न दिया। मैं अपनी खड़्डी पर बैठा हुआ था। पहरेदार भी देख रहा था और पूछता था ''बोलते क्यों नहीं?'' आखिर उसने कहा ''तुम कौन लाट हो, जो बोलते नहीं।'' मेरे भाग्यवश पाँच नंबर वाले ने कह दिया ''बंगाली बाबू हैं।'' परिणाम यह हुआ, मैं गालियों की बौछार से तो बच गया। क्यों? इसका कारण मैं इसी परिच्छेद में वर्णन करूँगा। यदि वह गालियाँ भी देता, मैं तब भी उत्तर न देता। गालियों का बदला किसी और दिन ले लेता। आधे घण्टे की सिर–खपाई के बाद गश्त करता हुआ बड़ा जमादार आया। ''बंगाली बाबू नहीं बोलता।'' यह सुनकर उसने पूछा– ''कौन–सा बंगाली?'' साथ की कोठरी वाले ने कहा '' बड़ा बाबू।'' नगेन्द्रचन्द्र बंगाली को आम कैदी छोटा बाबू कहते थे। ''नहीं बोलता, तो न बोले।'' जमादार ने कहा ''बैठा हुआ तो नज़र आता है। ये बंगाली बड़े जादूगर होते हैं।'' इससे मेरी तो छुट्टी हो गयी। दूसरी सुबह जब मैंने सिंहों से पूछा कि उन्होंने गालियाँ देकर अपना मौन क्यों तोड़ा? तो उन्होंने हँस कर कहा– ''गालियों के जोश में यह तो हमें याद ही न रहा।'' मैंने दिल ही दिल में कहा, दो शब्दों के परिवर्तन से यह फिकरा इनके जीवन का मूल–मंत्र कहा जा सकता है। ''दिल के जोश में दिमाग तो हमें याद ही न रहा।''

मेरे बाद वे मुझे गालियों की बौछार से क्यों बचा गये, इसका कारण एक विशेष घटना थी। जिस रोज़ मुझे कैद का हुक्म हुआ, मैंने दिल में ठान लिया कि सख्तियें तो दर–किनार मौत तक मिले, तो भी लूँगा, पर कभी किसी से गाली न सुनूँगा। मुझे मुलतान में आए अभी थोड़े दिन ही गुज़रे थे। मैं और नगेन्द्र बाबू एक रोज़ अपनी–अपनी कोठरियों से बाहर खड़े हुए बातचीत कर रहे थे। वार्डर ने नगेन्द्रबाबू को कोठरी के अंदर चले जाने के लिए कहा। नगेन्द्र कोठरी में चला गया। कोई शिकायत की जगह न थी। बाबू दो घंटे से बाहिर की हवा खा रहा था। अगर जेल का कानून प्रत्येक कैदी को एक घंटा बाहर टहलने की आज्ञा देता है, तो कई कैदी तो महीनों कोठरी से बाहर भी नहीं निकाले जाते और कई दिनभर जहाँ दिल आता है, घूमते हैं। जेल के अफ़सरों को कुवेरदेव की पूजा से इतनी फुर्सत कहाँ कि वे इन छोटी–छोटी बातों का ध्यान करें। चक्कियों का मालिक चक्कियों का वार्डर होता है। चाहे जिस पर कृपा–दृष्टि करे, चाहे जिस पर रोष दिखलावे। ऐसी अवस्था में दो घंटे की सैर के बाद वार्डर का कहना कुछ बुरा न प्रतीत होता था। नगेन्द्र को कोठरी में गये हुए अभी पाँच मिनट गुज़रे होंगे कि उसे शौच आने की आवश्यकता हुई। उसने वार्डर को चन्द मिनटों के लिए खोल देने के लिए कहा। इस पर न मालूम क्यों, वार्डर तो आग–बबूला हो गया। कहने लगा– ''अभी दो घंटे बाहर फिरते रहे, शौच याद नहीं आया। अभी बंद हुए और शौच याद आ गया। मैं नहीं खोलता।'' नगेन्द्र बाबू के एक दो बार कहने से भी जब उसने खोलने से इन्कार किया, तो बाबू ने इस बात की धमकी दी कि वह कोठरी के दरवाज़े को ही शौच–स्थान बना लेगा। वार्डर नया था, बाबू की आदत से नावाकिफ़ था। झट गाली दे उठा। मैं निकट ही खड़ा था। सहन न कर सका। मैंने कहा– ''देखो जमादार जी, गाली समझ–सोच कर निकालनी चाहिए। आदमी–आदमी पहचान लेना अच्छा होता है।'' वार्डर इस परामर्श को निगल न सका। मुझे भी एक गाली

शेष पृष्ठ 09 पर

मदर टेरेसा का चमत्कार और देश का संविधान

● भावेश मेरजा

4.9.2016 के गुजराती 'दिव्य भास्कर' (वड़ोदरा आवृत्ति) समाचारपत्र में प्रमुख समाचार का शीर्षक है – "मधरना स्पर्शमां ज चमत्कार हतो, सिस्टरोए जोयो" अर्थात् "मदर (टेरेसा) के स्पर्श में ही चमत्कार था, सिस्टरों ने देखा"

इस समाचार शीर्षक के अन्तर्गत लिखा गया है कि 1978 में त्रिवेन्द्रम में अनेक बच्चों के शरीर पर फुंसियाँ निकलने लगी थीं। बहुत दिनों तक उनको दवाइयाँ दी गईं किन्तु कोई सुधार न हुआ और स्थिति बिगड़ती चली गई। इतने में वहाँ मदर टेरेसा का आगमन हुआ। उन्होंने बस्ती में से उन सभी बीमार बच्चों को अपने पास बुलाया और एक–एक कर उन सबको प्यार से अपनी गोद में बिठाया, सहलाया और आशीर्वाद देकर घर वापिस भेज दिया। दूसरे दिन ये सभी बच्चे चंगे–स्वस्थ हो गए!

'दिव्य भास्कर' में लिखा है कि यह बात कोटा स्थित मदर टेरेसा होम में नियुक्त सिस्टर थोमस सीन ने कही।

हम समझते हैं कि गोद में बिठाकर सहलाने से या आशीर्वाद देने मात्र से रोग दूर नहीं हो सकता है।

ऐसी बातें सृष्टिक्रम–विरुद्ध तथा अवैज्ञानिक हैं जो प्रायः किसी व्यक्ति विशेष को 'चमत्कारी' सिद्ध करने के लिए और अल्पमति सरल–सीधे लोगों को अपने मत–पन्थ–मज़हब में दीक्षित करने के उद्देश्य से योजनाबद्ध ढंग से फैलाई जाती हैं।

अगर ऐसा सम्भव होता तो आयुर्वेद या आधुनिक चिकित्सा शास्त्र (Medical science) की कोई आवश्यकता नहीं होनी चाहिए। सरकारों को तत्काल सभी आयुर्वेदिक और मेडिकल कालेज बन्द कर देने चाहिए। रोगी या मरीज़ को केवल गोद में बिठाकर सहलाने से और आशीर्वाद देने मात्र से ठीक करने का यह दिव्य–भव्य विज्ञान (?) विकसित करने में लग जाना चाहिए!

हमारे देश के संविधान में मूलभूत कर्तव्यों के अन्तर्गत 'वैज्ञानिक मानस' (Scientific temper) को धारण एवं प्रोत्साहित करने की बात कही गई है।

मैं समझता हूँ कि मदर टेरेसा के सम्बन्ध में फैलाई जा रही उपर्युक्त बात अवैज्ञानिक, सृष्टिक्रम अर्थात् कार्य–कारण के नियम विरुद्ध, अन्धविश्वासपूर्ण होने से देश के संविधान की आत्मा का हनन करने वाली है। ऐसी बातों का प्रसारण देशहित में नहीं है ।

धार्मिक आस्थाओं के नाम पर अन्धविश्वास को प्रश्रय नहीं दिया जा सकता।

आशा है देशहितैषी पाठक इस गम्भीर समस्या पर सम्यक् विचार करेंगे।

8–17 टाऊनशिप, पो. नर्मदानगर, जि. भरूच,
गुजरात–392015, मो. 9879528247

☞ पृष्ठ 02 का शेष

भगवान शंकर ...

दोनों झगड़ा कर रहे हैं। पत्नी भी ऊँचे–ऊँचे बोल रही थी, पति भी। युद्ध छिड़ गया प्रतीत होता था। सेठ जी पर्याप्त समय तक प्रतीक्षा करते रहे कि झगड़ा समाप्त हो जाय, वह समाप्त नहीं हुआ। आवाज के तोपखाने पूरे वेग से चल रहे थे। तब सेठ साहब घबराकर ऊपर गये; बोले, "किस बात पर झगड़े जाते हो? तुम तो कभी झगड़ते नहीं थे? तुम्हारे जैसे लोग मैने नहीं देखे, फिर आज क्या हुआ?" पति ने कहा, "देखिये सेठ जी! आप ही इसको कुछ बुद्धि दीजिये। मैं कहता हूँ हम लड़के को वकील बनायेंगे, आनन्द से रुपया कमायेगा। समय पर कचहरी जायगा, समय पर वापस आयेगा। यह मूर्ख कहती है कि उसे डॉक्टर बनायेंगे। अब बताइये, डॉक्टर का जीवन भी कोई जीवन है? दिन को शान्ति न रात्रि को विश्राम। डॉक्टर बनाना तो उससे शत्रुता करना होगा।" सेठ ने श्रीमति से पूछा तो वह बोली, "मेरे तो भाग्य खोटे थे जो इनके पल्ले पड़ी। इन्हें तो रुपयों के अतिरिक्त कुछ सूझता ही नहीं। और फिर डॉक्टर क्या रुपया नहीं कमाते? रुपया कमाते हैं, दुःखियों की सेवा भी करते हैं। वकील का जीवन क्या है? हर समय झूठ, हर समय चिन्ता। मैं तो लड़के को डॉक्टर ही बनाऊँगी। 'सेठ साहब ने सोचते हुए कहा," इसके लिए इतना झगड़ा करने की क्या आवश्यकता है? लड़के से पूछ तो लो। यदि वह डॉक्टर बनना चाहता है तो डॉक्टर बना दो, वकील बनना चाहता है तो कानून पढ़ा दो। आओ! मैं तुम्हारे लड़के को पत्र लिखता हूँ। जो कुछ वह कहे उसे तुम दोनों मान लेना।" दोनों ने एक–साथ कहा, "परन्तु लड़का तो अभी पैदा ही नहीं हुआ!"

ऐसे लोगों को कहते हैं 'जल्पी'। सूत न कपास, घर में कट्ठम–लट्ठ। ऐसे व्यक्तियों में श्रद्धा नहीं होती, श्रद्धा न हो तो ज्ञान नहीं होता, ज्ञान न हो तो मन को एकाग्रता नहीं मिलती, मन एकाग्र न हो तो ईश्वर नहीं मिलता। जो लोग ब्रह्म को ढूँढ़ना चाहते हैं, उनके लिए आवश्यक है कि वे अपने अन्दर श्रद्धा उत्पन्न करें। ऐसे लोगों के लिए वेद कहता है, "उठो, जागो, और पहुँचो उनके पास जो जागे हुए हैं।" जागो इसलिए कहा कि संसार में कपट बहुत है। गुरु को ढूँढना हो तो पूर्ण बुद्धिमत्ता से कार्य लेना चाहिये। उसकी अच्छी प्रकार जाँच करनी चाहिये। जब एक बार बात समझ में आ गई, तो उसपर श्रद्धा करनी चाहिए। आज के संसार में अद्भुत खेल हो रहा है। या तो ऐसी श्रद्धा है जिसमें बुद्धि नहीं, या फिर ऐसी बुद्धि है जिसमें श्रद्धा नहीं है। हर समय पहचान होती रहती है, निर्णय नहीं होता। ये दोनों ही विधियाँ अशुद्ध हैं। श्रद्धा से पहले पूरे होश में जाँच करनी चाहिए, जाँच के पश्चात् पूरे विश्वास के साथ श्रद्धा करनी चाहिए, तभी बेड़ा पार होता है, नहीं तो नहीं।

और अन्त में छठी सम्पत्ति है 'समाधान'– मन को बाहर की सभी बातों से हटाकर ध्यान में लगा देने की शक्ति। मन यदि बाहर की बातों में फँसा रहे, उन्हीं की बातें सोचता रहे, तो ध्यान कभी होता नहीं। केवल ज्ञान से एकाग्रता प्राप्त नहीं होती। केवल अभ्यास से भी नहीं होती। ज्ञान और अभ्यास जब दोनों मिलें तब मन एकाग्र होता है। बाहर की बातों से मन को हटा देना, एकाग्र कर देना, ध्यान में मग्न हो जाना, ऐसी बातें हैं जिन्हें आप प्रतिदिन सुनते हैं। परन्तु आज मैं इसके सम्बन्ध में योग के कुछ ऐसे भेद बताऊँगा जिन्हें योगी लोग वर्षों से तप और ध्यान से प्राप्त करते हैं। चित्त और मन दोनों जड़ हैं। स्वयं वे कोई कार्य नहीं करते, स्वयं उनमें कोई शक्ति नहीं। उनमें शक्ति आती है और वे काम करते हैं उस समय जब आत्मा का प्रतिबिम्ब उनके ऊपर पड़ता है। यह प्रतिबिम्ब न पड़े तो मन कोई कार्य नहीं करता। मन न करे तो इन्द्रियाँ भी नहीं करतीं। मैं यह चश्मा लगाता हूँ न, इसलिए कि इससे दूर तक दिखाई देता है। परन्तु देखने का कार्य क्या यह चश्मा करता है? मैं आँखें बन्द कर लूँ तो चश्मा के वर्तमान रहने पर भी दिखाई नहीं देगा। परन्तु वास्तव में ये आँखें भी कुछ नहीं देखतीं। आपने देखा होगा कि कई लोगों की आँखें हैं फिर भी वे देख नहीं पाते; देखने का कार्य आँखें नहीं करतीं अपितु वह तन्मात्रा करती है जो आँखों के पीछे रहती है। परन्तु वास्तव में रूप–तन्मात्रा भी नहीं देखती, देखता है मन; और मन भी नहीं देखता, उसे देखने की शक्ति देता है आत्मा। वह अपनी शक्ति को हटा ले तो ये सब उपकरण किसी काम के नहीं रहते, कोई भी देख नहीं सकता। और जो दशा आँखों की है वही नाक, कान, जिह्वा और दूसरे उपकरणों की है। मन के कारण वे कार्य करते हैं और मन काम करता है आत्मा के कारण। देखनेवाला, सूँघनेवाला, सूननेवाला और स्वाद लेनेवाला वास्तव में आत्मा है। वह मिट जाये तो यह सब–कुछ लाश बन जाता है। पाँच कर्मेन्द्रियाँ, पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, उनके पीछे खड़ी हुई पाँच तन्मात्राएँ, उनके पीछे खड़ी हुई बुद्धि, उसके पीछे खड़ा हुआ मन, और उसके पीछे खड़ा हुआ चित्त–ये सब जड़ हैं। केवल उनके पीछे खड़ा हुआ आत्मा ऐसी वस्तु है, जो प्रकृति नहीं। यह समझता है, "मैं ही चित्त हूँ, मैं ही मन हूँ।" यह कोरे भ्रम के अतिरिक्त और कुछ है नहीं। चित्त और मन का स्वभाव है देखी, सुनी और जानी बातों को याद रखना, उनके सम्बन्ध में सोचते रहना, और फिर उसमें ठहर जाना। योगियों की भाषा में इसे 'परिख्या' (बार–बार याद करना), 'प्रवृति' (झुकाव या लगाव हो जाना) और स्थिति (ठहर जाना) कहते हैं। चित्त की वृत्तियाँ पाँच हैं– पहली 'क्षिप्त' अर्थात् रजोगुण और तमोगुण में डूब रहना; दूसरी–'निक्षिप्त' अर्थात् सात्त्विक बातों और सात्त्विक भाव में डूबे रहना; तीसरी 'मूढ़' अर्थात् सात्त्विक, तामसिक या राजसिक किसी भाव का न रहना– घोर नींद में सो जाना; चौथी 'एकाग्र' अर्थात् जो बात हम चाहते हैं, उसके अतिरिक्त मन को और किसी ओर न जाने देना, और पाँचवीं 'निरुद्ध' अर्थात् सभी विचारों, इच्छाओं और भावनाओं का अन्त हो जाना, केवल अपने–आप में खो जाना। पहली तीन दशाएँ योग में कुछ काम नहीं आती, काम आने की अपेक्षा उसमें रुकावट डालती हैं। दूसरी दोनों दशाएँ योग में काम आती हैं– पहली दशा योग की अवस्था को उत्पन्न करती है, एकाग्र होकर मन या चित्त योग के लक्ष्य की ओर बढ़ता है; दूसरी दशा का योग लक्ष्य है। इसमें वह महान् ज्योति दिखाई देती है जिसे योगी देखने का प्रयत्न करता है।

इस अन्तिम दशा को उत्पन्न करने और उस ज्योति को देखने की एक विधि यह है कि प्रातः जब सूर्य पूर्व की दिशा में उदय हो रहा हो तब अपने मकान की छत पर खड़े हो जाओ। सूर्य निकलने के कुछ समय पूर्व ही खड़े हो जाओ और उगते हुए सूर्य को देखो। एक क्षण के लिए सूर्य की आँख से आँख मिलाओ, फिर बन्द कर लो। बन्द कर लेने पर भी चमकता हुआ सूर्य दिखाई देता रहेगा। जब दिखाई देना बन्द हो जाय तब फिर आँखें खोल दो, फिर सूर्य को एक क्षण देखो, फिर आँखें बन्द करके उस ज्योति को अपने अन्दर देखो, बार–बार ऐसा करने से एक और शारीरिक लाभ होगा– सूर्य की किरणों के साथ वाली विद्युत् आँखों के द्वार शरीर में प्रविष्ट होगी। दूसरी ओर मानसिक लाभ होगा। ज्योति का वह आधार आपको मिल जायेगा जिसपर आपको ध्यान जमाना है, जिसपर अपने मन को एकाग्र करना है।

क्रमशः

कुटीर उद्योग से परिवार सुखी

● डॉ. अशोक आर्य

अथर्ववेद पति पत्नी के प्रेम का आधार ही गृह उद्योग को मानता है। इसलिए इस वेद के कुछ मन्त्र घर के कार्यों के अतिरिक्त महिलाओं के लिए सूत कातना। घर पर काते गए इस सूत से कपड़ा, दरी व घर की अन्य सामग्री के लिए बुनाई करना। सर्दी के लिए गर्म कपड़े आदि बनाना। फिर इस बनाए गए कपड़ से पहनने के लिए कपड़ों की सिलाई करन. आदि कार्यों को आवश्यक बताया। इन कार्यों से घर के सदस्यों में प्रेम बढ़ता है क्योंकि पत्नी इन कार्यों को करते हुए अपने हृदय का सारा प्रेम उंड़ेल देती है। जब इस प्रेम से बने सूत के धागों का बना कपड़ा पति पहनता है तो उसका हृदय भिओ आनंद से विभोर हो जाता है। जब घर के सभी सदस्य इन वस्त्रों का उपभोग करते हैं तो उनका स्नेह भी इन वस्त्रों को बनाने वाली माता, दादी, बहन आदि से जुड़ जाता है। इस प्रकार के कार्यों से वेद का स्पष्ट संकेत है कि अपने परिवार में सच्चा प्रेम स्थापित करने के लिए महिलायें घर का खाना बनाना, कपड़े धोना आदि कार्यों के अतिरिक्त घरेलू उद्योग के द्वारा परिवार के लिए सब प्रकार की बुनाई तथा सिलाई का कार्य करें। इस बात को अथर्ववेद इस प्रकार प्रकट कर रहा है :–

वासो यत्पत्नीभिरुतं तत्र स्योनमुप स्पृशात्।।

अथर्ववेद 14.2.51

मन्त्र शब्दार्थ में स्पष्ट संकेत ही नहीं दे रहा, आदेश भी दे रहा है, उपदेश दे रहा है कि घर पर पत्नियों ने जिस वस्त्र को बुना है वह वस्त्र हम पतियों को सुखदायक हो कर समीपता से स्पर्श करें।

मन्त्र के इन शब्दों में स्पष्ट रूप से संकेत मिलता है कि जो वस्त्र पत्नियों ने बुना है। इससे स्पष्ट होता है कि गृह कार्य का एक अंग स्त्रों की बुनाई भी है। बुनाई किस वस्तु से होती है? स्पष्ट है कि घर पर कटा हुआ सूत होगा तो हम कपड़ा बुन सकेंगे। अतः जब स्त्रियाँ घर पर सूत कात कर कपड़ा बुनेंगी तथा इस बनाए गए कपड़े से जब वह स्त्रियाँ वस्त्र बनाएँगी। वह वस्त्र पुरुष पहनें। इससे यह उपदेश मिलता है कि महिलाओं के हाथ के बने वस्त्र प्रत्येक घर के स्त्री पुरुष पहिनें। इससे आनंद मिलेगा किन्तु यह सब कैसे संभव हो पाएगा? इसे संभव करने के लिए नारी शिक्षा ही आधार हो सकता है।

वेद के इस आदेश को पूरा करने के लिए नारी का, विशेष रूप से वेद की शिक्षा का ज्ञान नारी के लिए आवश्यक है। वेद में जो बीज रूप में ज्ञान दिया हुआ है, उस ज्ञान को विस्तार से जानने की आवश्यकता है। जब तक वेद के इन गूढ़ रहस्यों को नारी जान नहीं लेती, तब तक वह यह कार्य नहीं कर सकती और तब तक वह अपने परिवार के लिए सुख शान्ति का सामान नहीं बना सकती। यदि परिवार में सुख, शान्ति तथा प्रेम नहीं है तो वह स्वयं भी सुखी नहीं हो सकती। अतः वेदानुसार अपने जीवन यापन के लिए यह आवश्यक है कि हम वेद की शरण में जाएँ, किसी उत्तम अध्यापक, वेद ज्ञाता के चरणों में बैठकर वेद का स्वाध्याय करें। वेद की शिक्षाओं को समझते हुए उनके अनुरूप ही अपनी दैनिक क्रिया–कलाप की व्यवस्था करें। यह शिक्षा ही हमारे पारिवारिक गतिविधियों के लिए मार्ग–दर्शक होगी तथा इस के अनुरूप जब हम और हमारी महिलाएँ चलेंगी, सब कार्य करेंगी तो निश्चय ही सब कार्य पूर्ण व्यवस्था से हम लोग कर पाने में समर्थ हो सकेंगे।

मन्त्र आगे कहता है कि जिन वस्त्रों की बुनाई तथा सिलाई पत्नियों ने बड़े प्रेम से, बड़ी लग्न से, बड़े उत्साह से की है, उन वस्त्रों में इन पत्नियों ने अपने हृदय का पूरा प्रेम उडेल दिया है। इस प्रकार के वस्त्रों को पहनते हुए पतियों को अपार सुख का अनुभव होता है। मन्त्र के इस उपदेश से स्पष्ट होता है कि घर की गृहिण ी ने इन वस्त्रों को बड़े ही स्नेह पूर्ण हृदय से बनाया है, जब परिजन इन वस्त्रों को धारण करते हैं तो उन्हें एक विशेष प्रकार के सुख का अनुभव होता है क्योंकि यह केवल कपड़े के धागे नहीं होते, यह पत्नी के, यह माता के प्रेम का प्रतीक होता है। इसलिए यह वस्त्र जब पति अथवा कोई परिजन पहनता है तो जब यह वस्त्र उसके शरीर को छूते हैं तो इन वस्त्रों के शरीर को छूते ही उसे जो अपार आनंद मिलता है, उस सुखदायक आनंद से विभोर यह व्यक्ति इन वस्त्रों के माध्यम से अपनी इस कपड़े बनाने वाली पत्नी, माता, बहन या अन्य किसी भी सम्बन्ध की महिला को मानो छू रहा हो और इस छूने की कल्पना मात्र से ही उसे अपार सुखों की अनुभूति होने लगाती है।

जब पति अथवा परिजनों को प्रसन्नता मिलती है तो यह वस्त्र बनाने वाली महिला अपने आप को अहोभाग्य मानती है, वह भी सुखों का अनुभव करते हुए आनंद से विभोर हो जाती है। जहाँ आनंद होता है, जहाँ प्रेम होता है, जहाँ शान्ति होती है, जहाँ प्रसन्नता होती है, वहाँ परम पिता परमात्मा निश्चय ही सुखों की वर्षा करता है। इसलिए परिवार की सुख समृद्धि के लिए यह कताई, यह बुनाई, यह सिलाई नितांत आवश्यक होती है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि यह हमारी स्त्री शिक्षा का एक वैदिक आदर्श है कि हमारी महिलाओं को सिलाई, बुनाई तथा अन्य घरेलु उद्योगों की समग्र जानकारी हो। जब तक हमारी महिलायें इस प्रकार की शिक्षा के अनुसार परिवार में यह सब कार्य करती रहीं, तब तक परिवारों में किसी प्रकार की कलह देखने को नहीं मिली। हमारे परिवार विशेष शान्ति व सौहार्द पूर्ण वातावरण में उन्नति पथ पर अग्रसर रहे किन्तु परिवारों में विदेशी प्रभाव आते ही हमारी नारियों ने अपने इन कर्तव्यों को भुला दिया। इसके कारण परिवार में शान्ति का स्थान कलह ने ले लिया। जिस कर्तव्य को नारी आजीवन निभाते का पारस्कर सूत्र के अनुसार विवाह संस्कार के समय प्रण लेती थी, उसे भूल गई तो परिवार में लड़ाई–झगड़ों का होना आवश्यक हो गया और यह झगड़े होने लगे। इन झगड़ों से परिवारों के टूटने का क्रम आरम्भ हुआ। पहले जिस परिवार की पत्नी अपनी सास की शरण में सुख पूर्वक रहती थी, अब उससे अलग रहने की इच्छा करने लगी। अलग होकर भी उसे सुख न मिला। अब पति पत्नी में झगड़ा होने लगा, तलाक होने से बच्चों का भविष्य भी अन्धकार में चला गया। इस सब से बचने के लिए हम सबको फिर से वेद की शरण में जा कर उसकी शिक्षाओं के अनुरूप स्वयं को बना कर परिवारों को बचाना होगा, तब ही सुख की कोई किरण हमारे तक पहुँच पाएँगी।

पाकेट 1 प्लाट F –61
रामप्रस्थ ग्रीन, वैशाली
गाजियाबाद– 201010 उ.प्र.

☞ पृष्ठ 04 का शेष

सभी दुःखों से मुक्ति ...

प्रवृत्त रखना। तीसरा **'उपरति'** जिस से दुष्ट कर्म करने वाले पुरुषों से सदा दूर रहना। चौथा **'तितिक्षा'**, इसका अर्थ है कि चाहे निन्दा, स्तुति, हानि, लाभ कितना ही क्यों न हो परन्तु हर्ष शोक को छोड़ मुक्ति साधनों में सदा लगे रहना। पांचवा **'श्रद्धा'** जो वेदादि सत्य शास्त्र और इन के बोध से पूर्ण आप्त विद्वान् सत्योपदेष्टा महाशयों के वचनों पर विश्वास करना। छठा **'समाधान'** चित्त की एकाग्रता ये छः मिलकर तीसरा **'साधन'** कहाता है। चौथा साधन **'मुमुक्षत्व'** है। जैसे तृषातुर को सिवाय अन्न व जल के दूसरा कुछ भी पदार्थ अच्छा नहीं लगता वैसे बिना मुक्ति के किसी दूसरे साधन से प्रीति न होना। इन साधनों के बाद ऋषि दयानन्द जी ने चार अनुबन्धों की भी चर्चा की है। इसके लिये पाठक सत्यार्थप्रकाश का पूरा नवम् समुल्लास ध्यानपूर्वक पढ़ेंगे तो उन्हें इसका पूरा ज्ञान व लाभ प्राप्त हो सकेगा।

मनुष्य का जन्म ज्ञान प्राप्ति, सदाचरण तथा मुक्ति के उपायों व साधनों को करने के लिये ही हुआ है। वह लोग धन्य हैं जो वेद, वैदिक साहित्य तथा सत्यार्थप्रकाश आदि ग्रन्थों को पढ़कर अपने जीवन को मोक्षगामी बनाते हैं। बिना मिथ्याचरण के त्याग तथा सत्याचरण और मोक्ष के साधनों को अपनायें हम दुःखों से पूरी तरह से निवृत्त नहीं हो सकते। हमने इस लेख में मोक्ष की चर्चा की है। यह ज्ञान किसी मत, मजहब, पन्थ व समुदाय के पास नहीं है। जब ज्ञान ही नहीं तो वह मोक्ष को प्राप्त भी नहीं हो सकते। जिस प्रकार अन्न, जल, वायु, सुभाषित और स्वर्ण के गुणों को न जानने वाला मनुष्य इन पदार्थो से लाभान्वित नहीं हो सकता, उसी प्रकार मोक्ष को न जानने वाला मनुष्य व धर्माचार्य भी मोक्ष के अनुरूप आचरण न करने से इसे प्राप्त नहीं कर सकता। मोक्ष प्राप्ति के इच्छुक मनुष्यों को ऋषि दयानन्द का जीवन चरित्र भी पढ़ना चाहिये। एक मुमुक्षु व योगी का जीवन कैसा होना चाहिये, इसे ऋषि दयानन्द के जीवन के अध्ययन से जाना जा सकता है। इसी के साथ इस चर्चा को विराम देते हैं। ओ३म् शम्।

196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोन:09412985121

रेणु

● शिवनारायण उपाध्याय

रेणु ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 89 की ऋषिका है। इस सूक्त में कुल 18 मंत्र हैं। इन मंत्रों में अधिकांश में परमेश्वर के गुणों का वर्णन हुआ है। ईश्वर की स्तुति और प्रार्थना को स्थान मिला है परन्तु मंत्र संख्या 5 व 6 में क्रमशः वर्षा और वनों का वर्णन है। मं.स. 7 में ईश्वर को सबसे महान् बताया गया है। पहले मंत्र में परमात्मा की स्तुति करने को कहा गया है–

इन्द्रं स्तवा नृतमं यस्यमह्ना वि बबाधे
रोचना वि ज्मो अन्तान्।
आ यः प प्रौ चर्षणीधृद्वरोभिः प्र
सिन्धुभ्यो रिरिचानोमहित्वा।।

ऋ. 10.89.1

पदार्थ– (**यस्य**) जिसकी (**मह्ना**) महिमा (**रोचना**) समस्त सूर्य आदि चमकने वाले पदार्थों के तेज को (**विबबाधे**) अभिभूत करती है। (**विज्मः**) पृथ्वी के (**अन्ताम्**) पर्यन्त भागों तक अभिभूत करता है (**चर्षणीधृत्**) मनुष्य मात्र का पालक (**महित्वा**) महिमा से (**सिन्धुभ्यः**) समुद्रों (**प्ररिरिचान**) बढ़ा हुआ (**यः**) जो (**वरोभिः**) तमोवारक तेजों से (**आ पप्रौ**) आकाश आदि को पूर्ण करता है (**नृतमम्**) नेतृतम् उस (**इन्द्रम्**) भगवान की हे मनुष्यत (**स्तव**) स्तुति करें।

भावार्थ – हे मनुष्य। तू अपने नेतृतम भगवान् की स्तुति कर जिसकी महिमा समस्त सूर्य आदि पदार्थों और पृथ्वी की सीमाओं को भी परे है। वह परमात्मा मनुष्यों का रक्षक और समुद्र से भी बड़ा है और अपने तेज से सभी को पूरित करता है।

अगले मंत्र में फिर ईश्वर की स्तुति करते हुए कहा है कि वह सबका प्रेरक है और सूर्य आदि को भी चलाता और घुमाता है। सृष्टि चक्र को भी वही चलाता है। अपने ज्ञान के प्रकाश से अविद्या के अन्धकार को वही हटाता है।

फिर अगले मंत्र में भी मनुष्य से कहा गया है कि जो सबका स्वामी है। वह परमात्मा अपने मित्र जीव और सृष्टि के जन्मों को जानता है तथा स्वयं किसी पदार्थ को पाने की इच्छा नहीं करता है उसकी सतुति और प्रार्थना कर।

मंत्र संख्या 7 में बताया गया है कि वर्षा का कारण भी एकमात्र वही परमात्मा है।

आठवें मंत्र में पुनः ईश्वर की महत्ता का वर्णन हुआ है।

त्वं ह त्यदृणाया इन्द्र धीरोऽसिर्न पर्व
वृजिना श्रृणासि।
प्र ये मित्रस्य वरुणस्य धाम युजं
न जना मिनन्तिमित्रम्।।

ऋ. 10.89.8

पदार्थ – (**इन्द्र**) हे परमेश्वर। (**त्वम्**) तू (**ह**) ही (**त्यत्**) उन परम धनों को (**ऋणयाः**) देने वाले हो। (**न**) जिस प्रकार (**असि**) तलवार (**पर्व**) फेर फेर को काटती है उसी प्रकार तू (**वृजिना**) अनेक पापों और बुराइयों को (**शृणासि**) काटता है। (**ये**) जो (**जनाः**) लोग (**मित्रस्ये**) मित्र के (**वरूणस्य**) श्रेष्ठ पुरुष के (**धाम**) तेजस्वी कर्म (**युजम्**) सहयोगी (**मित्रम्**) मित्र को (**न**) सम्प्रति (**प्रमिनन्ति**) मारते हैं उनको भी आप (**श्रृणासि**) दण्ड देते हो।

भावार्थ – हे परमेश्वर। तू ही सब धनों का दाता है। जैसे तलवार से मनुष्य के टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाते हैं वैसे ही तू अनेक पापों और बुराइयों को काट देता है। जो लोग अपने सहयोगी मित्र और विद्वान् के श्रेष्ठ कार्यों को हानि पहुँचाते हैं उन्हें भी आप दण्ड देते हो।

प्र ये मित्रं प्रार्यमणं दुरेखाः प्र सङ्गिरः
प्र वरूणं मिनन्ति।
न्य 1मित्रेषु वधमिन्द्र तुम्नं
वृषन्वृषाणमरूषं शिशी हि।।

ऋ. 10.89.9

पदार्थ– हे (**वृषन्**) शक्तिमन्। (**इन्द्र**) ऐश्वर्यवन् राजन्। (**दुरेवाः**) दुष्ट गति वाले (**ये**) जो लोग (**मित्रम्**) मित्र को (**प्रमिन्ति**) मारते हैं। (**अर्यमणम्**) न्यायकारी को (**प्र**) मारते हैं (**संगिरः**) स्तुति करने वाले ऋत्विजो को (**प्र**) मारते हैं (**वरूणम्**) अत्यन्त वरणीय अधिकारी वा शासक को (**प्र**) मारते हैं (**अमित्रेषु**) अमित्रभूत इनके ऊपर (**तुम्नम्**) गमनशील (**वृषणाम्**) दुःखों के वर्धक (**अरूषम्**) भास्वर (**वधम्**) वज्रकों (**नि शिशीहि**) तीक्ष्ण कर।

अगले मंत्र में बताया गया है कि वह परमेश्वर ही द्युलोक का, पृथ्वी का शासक है। वह सर्व शक्तिमान् जलों और अन्तरिक्ष पर भी शासन करता है। वह परमात्मा अप्राप्त की प्राप्ति के लिए भी पुकारने योग्य है।

इसी प्रकार अगले दो मंत्रों में कहा गया है कि वह रात्रियों का दिनों का अन्तरिक्ष को घेरने वाले स्थान, वायु के फैलाव और पृथ्वी पर्यन्त सभी से विशाल है। वही अपने वज्र से पापियों को दण्ड देता है। फिर तेरहवीं ऋचा में सूर्य के गुणों का वर्णन हुआ है।

अन्वह मासा अन्विद्वनान्यन्वोषधीरनु
पर्वतासः।
अन्विन्द्रं रोदसी वावशाने अन्वापो
अजिहत जायमानम्।।

ऋ. 10.89.13

पदार्थ – सूर्य के ही अनुसार महीने चलते हैं। अरण्य भी उसी का अनुसरण करते हैं। प्रादुर्भूत होते हुए सूर्य का ही कान्ति युक्त द्यु और पृथ्वी अनुसरण करते हैं। जल भी सूर्य का ही अनुसरण करते हैं।

अगली ऋचा में कहा गया है कि हे तेजस्वी पुरुष। तेरे पापों का नाश करने वाली शक्ति कब प्रकट होती है जिससे तू राक्षसों का भेदन करे और मित्रों से द्रोह वा क्रूरता करने वालों को भयभीत करे जिससे हत्यागर में मरकर वे पृथ्वी पर पड़ जाएँ।

अगली ऋचा में भी इसी विषय को विस्तार देते हुए कहा गया है कि ये जो शत्रु के समान व्यवहार करने वाले, संघ बनाए हुए बहुत पीड़ित करते हुए हमें सब ओर से गिराते हैं। हे शत्रु नाशक पुरुष। वे शत्रु गण अन्धकारमय तम से युक्त होवे और उन्हें उत्तम प्रकाश वाले दिन और रात्रिगण भी पराजित करें। अर्थात् इस मंत्र में दुष्ट स्वभाव वाले पुरुषों के नाश की कामना है।

पुरुणि हि त्वा सवना जनानां ब्रह्माणि
मन्दन्गृणतामृषीणाम्।
इमामाधोन्नवसा सहूतिं तिरो
विश्वां अर्चतो याह्यर्वाङ्।।

ऋ. 10.89.16

पदार्थ – हे प्रभो। (**त्वा**) तुझे (**जनानाम्**) मनुष्यों को (**पुरुणि हि**) बहुत (**सवना**) उपासना, यज्ञ आदि का तथा (**गृणताम्**) स्तवक (**ऋषीणाम्**) मंत्र दृष्टाओं के (**बृह्माणि**) मंत्र (**मदन्**) प्रसन्न करते हैं वे (**सदूतिम्**) एक साथ मिलकर करने योग्य इस प्रार्थना को भी (**अवसा**) ज्ञान और प्रेम से (**त्वा**) आप के लिए (**आधो वन्**) प्रकट करते हैं। हे प्रभो। (**विश्वान्**) सब (**अर्चतः**) प्रार्थना करने वालों को (**अर्वाङ्**) साक्षात् (**अवसा**) रक्षा से (**तिरः**) संसार के दुःखों से दूर (**याहि**) प्राप्त कर।

अगली दो ऋचाओं में भी इसी विचार को विस्तार दिया गया है।

एवा ते वयमिन्द्र भुञ्जतीनां विद्याम
सुमतीनां नवानाम्।
विद्याम वस्तोरवसा गृणन्तो
विश्वामित्रा उत त इन्द्र नूनम्।।

ऋ. 10.89.17

पदार्थ – (**एव**) इस प्रकार (**इन्द्र**) हे ऐश्वर्यवन्। (**वयम्**) हम (**ते**) मेरी (**भुञ्जनीनाम्**) रक्षात्मक (**नवानाम्**) नित्य नवीन (**सुमतीनाम्**) उत्तम अनुग्रह बुद्धियों को विद्याय सदा जानें। हम (**विश्वमित्रा**) सबके मित्र होकर (**वस्तोः**) दिन रात (**नूनम्**) अवश्य (**अवसा**) ज्ञान और प्रेम से (**ते**) मेरी (**गुणन्तः**) स्तुति करते हुए (**इन्द्र**) हे भगवन्। (**ते**) तेरी ज्ञानमयी वेदवाणियों को (**विद्याम**) जाने।

शुनं हुवेम मघवानमिन्द्रमस्मिन्भरे
नृतमं वाजसातौ।
श्रृण्वन्तमुग्रमूतये समत्सु वृत्राणि
सञ्जितं धनानाम्।।

ऋ. 10.89.18

पदार्थ – हम लोग (**मघवानम्**) ऐश्वर्यों के स्वामी (**शुनन्**) महान् अथवा व्यापक (**इन्द्रम**) समस्त ऐश्वर्यों के दाता (**वाजसातौ**) ऐश्वर्य और ज्ञान के प्रदान में (**नृतमम्**) सर्वश्रेष्ठ (**ऊतये**) रक्षा के कार्य में (**उग्रम्**) बलवान (**शुण्वन्तम्**) सबकी सुनने वाले (**समत्सु**) युद्धों में (**वृत्राणि**) विघ्नों को (**ध्नन्तम्**) नाश करने वाले (**धनानाम्**) समस्त धनों को (**सजितम्**) जीतने वाले प्रभु को (**अस्मिन्**) इस (**नरे**) जीवन सागर में (**हुवेम**) पुकारते हैं।

भावार्थ – हम लोग ऐश्वर्यों के स्वामी महान् व्यापक, समस्त ऐश्वर्यों के दाता, ऐश्वर्य और ज्ञान के प्रदान में सर्वश्रेष्ठ, रक्षा के कार्य में बलवान्, सबकी सूनने वाले, युद्धों में विघ्नों का नाश करने वाले, समस्त धनों को जीतने वाले प्रभु को हम जीवन सागर मे पुकारते हैं।

इस प्रकार ऋषिका रेणु ने अपने वेद के रहस्यों को खोजा है। इतिशम्।

73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी,
कोटा (राज.)

☞ *पृष्ठ 06 का शेष*

वे मुझे गालियों की ...

निकाल कर बोला– ''तुम कौन हो?'' मैं तो नगेन्द्र की मानिन्द कोठरी में बन्द विवश न था। बिना आगापीछा देखे, मैंने तो उसके मुँह पर एक ऐसी चपत जमा दी कि उसकी पगड़ी ज़मीन पर गिर पड़ी। वह बैटन लेकर मेरी ओर लपका। मैंने बैटन पकड़ लिया और इस कश–मकश में बैटन के दो टुकड़े हो गये। जब उससे और कुछ न बन पड़ा, तो उसने चाबियों का गुच्छा मुझ पर फैंक मारा। मैं एक तरफ हो गया। घररर करता हुआ गुच्छा मेरी गर्दन के पास से गुज़र कर ज़मीन पर जा पड़ा। इस गुच्छे की एक लम्बी चाबी मेरी गर्दन से छू गयी और अपना निशाना बना गयी। अच्छा हुआ, अब ब्रिटिश न्याय मेरे हक में होगा, मुझे कोई संदेह न रहा। मुकदमा जेल की कचहरी में पेश हुआ। मेरी जीत हुई। वार्डर को वहाँ से बदल कर सज़ा के तौर पर रात की नौकरी में भेज दिया गया। घंटों में यह समाचार सारे जेल में फैल गया। परिणाम यह हुआ, इसके बाद जब तक मैं जेल में रहा, न तो वार्डर को, न जमादार को मुझे गाली देने की और न किसी को मुझ पर हाथ उठाने की ही जुर्रत हुई।

क्रमशः

देहली–बम–रहस्योद्‌घाटन से साभार

पत्र/कविता

सुविचार पढ़ो -सुनो करो

लेना चाहते हो तो बड़ों का आशीर्वाद लो।
देना चाहते हो तो बड़ों को इज्जत दो।
सुनना चाहते हो तो दुखियों की पुकार सुनो।
पहचानना चाहते हो तो स्वयं को पहचानो।
मिटाना चाहते हो तो अत्याचार को मिटाओ।
बोलना चाहते हो तो मीठा बोलो।
देखना चाहते हो तो अपने अवगुण देखो।
करना चाहते हो तो परोपकार करो।
सुख चाहते तो माता-पिता को खुश करो।
पढ़ना चाहते हो तो अच्छे लेख पढ़ो।
सफल होना चाहते हो सत्य का मार्ग चुनो।
गर्व करना चाहते तो अपने देश पर गर्व करो।
मारना चाहते हो तो अपनी इच्छाओं को मारो।
जानना चाहते हो तो परमेश्वर को जानो।
जीतना चाहते हो तो तृष्णाओं को जीतो।
सीखना चाहते हो तो वेदों से सीखो।
सुख और स्वर्ग का सोपान पुण्य है।
भाग्य पर भरोसा न करो, चरित्र पर करो।
अच्छाई का अभिमान बुराई की जड़ है।
बुरा करने वाले का बुरा होता है।
किसी को भक्त ईश्वर का बनाना बड़ा पुण्य का कार्य है।
अच्छी बात मानना ही सत्संग है।
मन की चाह ही दरिद्रता है।
ज्ञानमुक्त और उसका अभिमान नर्क का रास्ता है।
भले बनो भलाई भी करो।

स्वामी प्रवासानंद सरस्वती,
आर्य समाज, उज्जैन

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन के समापन होने पर प्रबन्धकों व आयोजकों को हार्दिक साधुवाद

मुझे राजधानी दिल्ली के रोहिणी सैक्टर 10 के जापानी पार्क में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2018 के प्रबन्धको व आयोजकों द्वारा 25 अक्टूबर 2018 से 28 अक्टूबर 2018 तक चार दिन का आयोजन महासम्मेलन में भाग लेने का अवसर मिला। 27 अक्टूबर 2018 को प्रातः आस्था चैनल पर आर्य महासम्मेलन में राष्ट्रीय कवि श्री हरिओम द्वारा देशभक्ति की कवितायें सुनी तथा उन्होंने "आर्य समाज" की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कटु सत्य ही कहा कि लोकतंत्र भारत देश में समय-समय पर अहि सत्तादल सरकारों ने देश का जरूर ही विकास किया है। इसमें कोई शक नही लेकिन सरकारों ने समाज में रहने वाले इन्सान के अमूल्य जीवन का विकास नही किया। राष्ट्रीय कवि श्री हरिओम पवार जी ने बिल्कुल शतप्रतिशत सही ही कहा है कि केवल समूह विश्व में "आर्य समाज" एक ऐसा संगठन है जिसने इन्सान के जीवन का सही माने में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के आर्दशवादी सिद्धांतानुसार विकास बढ़ चढ़कर किया है और अभी तक जारी है। हरिओम पवार कवि ने आर्य महासम्मेलन में सामाजिक व राष्ट्रीय चेतना जागृत करने के लिए बहुत ही सुन्दर कवितायें व विचार करने के लिए मैं उनको साधुवाद देता हूँ। आर्य महासम्मेलन में गुरुकुल कांगड़ी में शिक्षा ग्रहण करने बच्चों ने बहुत ही सुंदर ढंग से विचार रखें तथा विभिन्न नाटकों द्वारा समाज में चेतना लाने का प्रयास किया। इसके आलावा अनेक महापुरुषों ने बहुत ही सुन्दर विचार रखकर स्वर्ण जयती जापानी पार्क सैक्टर 10 रोहिणी में चार दिनों में रोजाना उपस्थित होने वाले हजारों, लाखो श्रद्धालु आर्य प्रेमियों का दिलजीत कर मुग्ध कर दिया जिसमें मैं भी उनमें से एक हूँ। मैं इस पत्र के माध्यम से तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय महासम्मेलन 2018 आयोजन करने वाले आयोजकों, प्रबन्धकों व आर्य सार्वदेशिक सभा के समस्त पदाधिकारियों व महासम्मेलन में आये प्रमुख अतिथियों को साधूवाद देता हूँ। मेरा अनुरोध है कि भविष्य में हर वर्ष इसी स्थान पर आर्य महासम्मेलन का आयोजन करते रहें।

देशबन्धु
RZ – 127 प्रथम तल, सन्तोष पार्क, उत्तम नगर, नई दिल्ली – 110059

****

जो नया मौका हाथ लगा था उसे गवां दिया है

भारत और पाकिस्तान के विदेश मंत्रियों की न्यूयार्क में होनेवाली भेंट का रद्द होना काफी दुर्भाग्यपूर्ण है लेकिन उससे भी ज्यादा बुरा यह हुआ कि दोनों देशों की तरफ से एक-दूसरे के नेताओं के लिए बेहद अमर्यादित बयान जारी हुए। इस भेंट को रद्द करने की घोषणा करते हुए भारतीय प्रवक्ता ने कहा कि अब 'इमरान खान का असली चेहरा उजागर हो गया' और उनके 'कुत्सित इरादे' भी ! इतना सुनते ही इमरान ने ईंट का जवाब पत्थर से दिया। उन्होंने मोदी का नाम लिए बिना कहा कि ''छोटे दिमाग के लोग बड़ी-बड़ी कुर्सियों में बैठे हैं।'' वे अहंकारी और निषेधात्मक हैं।

एक भारतीय जवान नरेंद्र सिंह की पाकिस्तानी सेना द्वारा बर्बरतापूर्ण हत्या, कश्मीर के तीन पुलिसवालों का उनके घर से अपहरण और उनकी हत्या और आतंकवादियों की स्मृति में पाकिस्तान सरकार द्वारा डाक टिकिट जारी करना। ये तीनों कारण ऐसे नहीं हैं, जिनके कारण उक्त भेंट रद्द की जानी चाहिए थी। जनता के गुस्से की उपेक्षा प्रधानमंत्री कैसे कर सकते थे लेकिन उन्हें यह भी सोचना चाहिए था कि क्या भारत-पाक संबंधों को हम किसी एक सिरफिरे पाकिस्तानी फौजी या आतंकवादी के हाथों गिरवी रख सकते हैं? वह बर्बरतापूर्ण सत्य सर्वथा निंदनीय है लेकिन क्या वह इमरान खान के इशारे पर किया गया था?

यदि दूरदृष्टि और गंभीरता होती तो इन तीनों मुद्दों को न्यूयार्क की भेंट में जमकर उठाया जा सकता था। हमारी सरकार ने इमरान के आने पर जो नया मौका उसके हाथ लगा था, उसे गवां दिया है।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक
dr.vaidik@gmail.com

****

सौहार्द, विकास का नया अध्याय प्रारम्भ होगा

आर्य जगत् के माध्यम से जम्मू कश्मीर के राज्यपाल महामहिम सत्यपाल सिंह मलिक को सम्पूर्ण आर्य हार्दिक बधाई देते हैं और विश्वास व्यक्त करते हैं कि विगत् 40 वर्षो से जम्मू कश्मीर में राजनैतिक विचारधारा में नया सबेरा उदय होगा।

श्री सत्यपाल सिंह मलिक छात्र जीवन से ही सदैव अन्याय के विरूद्ध संघर्षशील है? वह अत्यन्त साधारण आर्य परिवार के सदस्य रहे हैं।

देश के प्रत्येक आर्य परिवार को विश्वास है कि स्वामी दयानन्द की भाँति वह जम्मू कश्मीर में नया सामाजिक, राजनैतिक वातावरण पुनः स्थापित करने में सफल होंगे। शुभकानायें।

जन्मू कश्मीर में सोशल मिडिया भी अपना सहयोग मलिक जी को देगा। आंतकवाद का अध्याय अब खत्म हो रहा है। सौहार्द, विकास का नया अध्याय प्रारम्भ होगा इसलिए सोशल मिडिया की भूमिका ज्यादा महत्त्वपूर्ण होगी।

कृष्ण मोहन गोयल
113 बाजार कोट
अमरोहा-244221 उ.प्र.
मो. 9927064104

****

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर के विद्यार्थियों ने जीते 6 मेडल

डी.ए.वी. विश्वविद्यालय जालंधर में विद्यार्थियों द्वारा महर्षि मारकंडेश्वर यूनिवर्सिटी मुलाना में आयोजित राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीतकर लौटने पर वीरवार को विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। संस्थान के विद्यार्थी इंद्रजीत, आभा और किरण गोयल ने इन्स्टलेशन में गोल्ड, वीबग्योर में अंकित ने गोल्ड, क्लासिकल डांस में मनन ने सिल्वर मेडल, हिंदी कविता में राघव, सोलो सिंगिंग में अमन ने ब्रांज मेडल हासिल किया।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. राकेश महाजन, डीन अकादमिक डॉ. देशबंधु गुप्ता और डीन वेल्फेयर डॉ. जसबीर ऋषि ने विद्यार्थियों को बधाई दीं। डॉ. महाजन ने कहा कि इस तरह के प्रतियोगिता से विद्यार्थियों को अपने हुनर दिखाने का मौका मिलता है। साथ ही विद्यार्थियों का आत्मविश्वास बढ़ता है।

संस्थान एवं मीडिया विद्यार्थी द्वारा सामाजिक मुददों पर बनाई फिल्म को देखकर संस्थान में पढ़ रहे विद्यार्थी सड़क हादसों के प्रति निश्चय ही जागरूक होंगे। प्रतियोगिता में कॉडिनेटर के रूप में डॉ. संदीप कुमार और डॉ. अनिता अबरोल ने सहयोग किया।

डी.ए.वी. जगजीतपुर, हरिद्वार में दो दिवसीय वैदिक चेतना सम्मेलन

डी.ए.वी. सेन्टेनरी पब्लिक स्कूल हरिद्वार में दो–दिवसीय वैदिक चेतना सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। डी.ए.वी. प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के प्रधान एवं विद्यालय के चेयरमैन श्री पूनम सूरी जी के आशीर्वाद एवं निर्देशन से वैदिक चेतना की अलख जगाने की एक कोशिश डी.ए.वी. हरिद्वार के प्राथमिक एवं माध्यमिक कक्षाओं के विद्यार्थियों ने की।

दो दिन तक चलने वाले वैदिक चेतना सम्मेलन का शानदार आग़ाज़ हुआ। प्रतिस्पर्धा के इस युग में अंग्रेजी शिक्षा का ज्ञान अर्जित कर अपनी संस्कृति और संस्कारों से जोड़े रखना डी.ए.वी. का मुख्य उद्देश्य है। कार्यक्रम का शुभारम्भ गायत्री मंत्र के साथ दीप प्रज्ज्वलन से किया गया, तत्पश्चात् डी.ए.वी. गान गाया गया।

कार्यक्रम के प्रथम दिवस के मुख्य वक्ता एवं मुख्य अतिथि श्री महावीर अग्रवाल थे। प्रधानाचार्य श्री पीसी पुरोहित ने पुष्प गुच्छों से शाल ओढ़ाकर मुख्य अतिथि का स्वागत किया। मुख्य अतिथि श्री महावीर अग्रवाल ने कहा कि आज हम सभी अपने बच्चों को संस्कारवान एवं श्रेष्ठ बनाना चाहते हैं। यदि हम अपने बच्चों को अच्छे संस्कार देने हेतु मातृवान्, पितृवान् तथा आचार्यवान् का मंत्र दिया। आचार्य को अच्छी शिक्षा देने के साथ–साथ अपने चरित्र द्वारा बच्चों के सामने उदाहरण प्रस्तुत करते हुए उन्हें एक श्रेष्ठ विद्यार्थी/एक श्रेष्ठ मानव बनाना होगा। उन्होनें श्री पीसी पुरोहित जी को एक श्रेष्ठ, यशस्वी एवं मानवीय गुणों से भरपूर प्रधानाचार्य बताया तथा एवं अभिभावकों से आग्रह किया कि अपने बच्चों को श्रेष्ठ बनाने में वे एक अच्छी माँ, अच्छे पिता होने का कर्तव्य निभाएं तभी भारत की आने वाली पीढ़ी सुसंस्कृत एवं मानवीयगुणों से सुसज्जित हो भारत को फिर से विश्वगुरू बना सकेगी। उन्होंने कहा कि बाहरी प्रदूषण की बात सभी करते हैं तथा इस प्रदूषण से निजात पाने के कोशिश में भी लगे हैं किंतु आंतरिक प्रदूषण की बात कोई नहीं करता। यदि आंतरिक प्रदूषण को खत्म कर दिया जाए तो सारा विश्व अति सुन्दर हो जाएगा।

दूसरे दिन मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने प्रज्ज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। प्रधानाचार्य श्री पीसी पुरोहित ने मुख्य अतिथि का स्वागत पुष्पगुच्छ सें एवं शाल ओढ़ाकर किया।

मुख्य अतिथि श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने कहा कि मनुष्य की आयु केवल उतनी ही जानी जाती है, जो कि शुभ कार्यों में व्यतीत होती है। जिस प्रकार सूखी घास को जलाने के लिए केवल एक चिंगारी की आवश्यकता है, उसी प्रकार समाज को जागृत करने के लिए एक व्यक्ति ही काफी है। उन्होंने कहा कि गुरू एक खाली माचिस जैसा है, जब तक उसे तीली जैसा कोई शिष्य नहीं मिलता जो कि समाज को बदलने के कुब्बत रखता हो। जैसे गुरु वशिष्ठ को श्रीराम मिले, संदीपनी को श्रीकृष्ण, स्वामी विरजानन्द को स्वामी दयानन्द सरस्वती मिल गए जिन्होनें समाज से कई कुरीतियों को दूर कर एक नवीन समाज की स्थापना की। इसी प्रकार आज यदि किसी गुरू को कोई इन जैसा शिष्य मिले तो समाजिक परिवर्तन सम्भव है। दोनों दिन के कार्यक्रमों में लगभग 1500–1500 अभिभावक एव अन्य अतिथियों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

अन्त में विद्यालय के प्रधानाचार्य ने मुख्य अतिथि, उपस्थित एलएमसी मैम्बर्स तथा अभिभावकों का छात्रों का उत्साहवर्धन करने के लिए धन्यवाद दिया।

आर्य समाज पटियाला में ऋग्वेद पारायण महायज्ञ हुआ सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर पटियाला दुआरा आयोजित सात दिवसीय ऋग्वेद महायज्ञ ने मेरठ में पधारे यज्ञ के ब्रहमा आचार्य संजय याज्ञिक दुआरा तीसरे दिवस के कार्यक्रम का शुभारम्भ विश्व के सर्वश्रेष्ठ कर्म वैदिक यज्ञ के साथ किया गया आर्य समाज के पदाधिकारी एवं सदस्यों ने विश्व के मंगल कामनाये हुए यज्ञ अग्नि में आहुतियाँ प्रदान की।

यज्ञ के ब्रहमा आचार्य संजय याज्ञिक जी ने कहा कि संसार को समझने के लिए ज्ञान की आवश्यकता है और ज्ञान के रूप में सृष्टि के सबसे प्राचीन ग्रन्थ, परम्परा, तर्क व विवेचन से यह सिद्ध होता है कि चारों वेदों का ज्ञान सृष्टि की आदि में चार ऋषियों को ईश्वर दवारा प्रदत्त ज्ञान है। महर्षि दयानन्द जी ने कहा है कि जो वेद में बताये मार्ग अनुसार अपना जीवन व्यतीत करता है उनका जीवन सुखमय बना रहता है।

कार्यक्रम में पानीपत में पधारे प्रसिद्ध भजनोंपदेशक राम नरेश आर्य जी ने अपने प्रभु–शक्ति एवं देश–भक्ति के मधुर भजनों से विशेष तौर से "उस सुख की नहीं इच्छा, जिसमें तुम्हारी याद नहीं" से श्रोताओं को मन्त्र मुग्ध कर दिया।

श्री बिजेन्द्र शास्त्री ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। उन्होंने कहा कि मनुष्य धर्म वेदों अर्थात् सत्य ज्ञान का अध्यायन व आचरण करना ही है।

आर्य समाज के प्रधान राज कुमार सिंगला ने सभी का धन्यवाद प्रगट किया और उन्होंने कहा कि सभी शहरवासियों को इस कार्यक्रम में शामिल होकर अधिक से अधिक लाभ लेने का आह्वान किया।

सत्संग के समापन पर प्रसाद वितरित किया गया।

Registration No. R.N.I. 39\57
Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11\6066\2018-20
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. **U(C)-103\2018-20**
Posted at N.D.P.S.O. ON 21/22-11-2018

एच.एम.वी. जालंधर की छात्राओं ने इको-फ्रैंडली और सद्भावना से दीवाली मनाने का वचन दिया

'ग्रीन दीवाली' – करुणा का दीपक जलाएँ और इसे जलने दें' उन शब्दो से डॉ. श्रीमती अजय सरीन को सभी को पटाखों रहित दीवाली मनाने का संदेश दिया।

इस मौके पर मुख्य अतिथि के रूप में डिप्टी कमिश्नर श्री वरिन्द्र कुमार शर्मा, आई.ए.एस. उपस्थित हुए। उनका स्वागत प्रिंसीपल प्रो. डॉ. सरीन ने प्लांटर भेंट करके किया। इस मौके पर श्री वरिन्द्र कुमार शर्मा, आई.ए.एस. ने कहा कि लोगों को वायु और ध्वनि प्रदूषण व इसके नुकसान के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है और जिला प्रशासन इसके लिए कार्यरत है। इन्होंने कहा कि अगर किसान प्रणाली जलाना छोड़ सकते हैं तो हम भी पर्यावरण के लिए अपना कर्त्तव्य निभाते हुए पटाखे चलाना छोड़ सकते हैं।

डॉ. श्रीमती अजय सरीन ने बताया कि यह मुहिम कॉलेज ने पिछले साल शुरू की जिसका काफी संख्या में रिस्पांस रहा है। उन्होंने छात्राओं को समाज के क्रम विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के साथ दीवाली मनाने के लिए प्रोत्साहित किया। इसी के साथ अपने जेब खर्च उपहार खरीदकर इस वर्ग को देने के लिए भी कहा। इससे करुणा तथा सद्भावना की भावना पैदा होगी। डी.ए.वी. मैनेजिंग कमेटी की तरफ से दीवाली की शुभकामनाएँ दी गई। इस मौके पर छात्राओं ने रैली निकाली व अनेक नारों के साथ पटाखे न चलाने के लिए सभी से आग्रह किया। कार्ड मेकिंग प्रतियोगिता का भी आयोजन हुआ। मंच संचालन डॉ. अंजना भाटिया ने किया। इस मौके पर जिला कांउसलर श्री सुरजीत लाल, डीपीआरओ मनविंदर, एपीआरओ जतिंदर कुमार, डीन इनोवेशन डॉ. रमनीता सैनी शारदा, सुश्री मंगला साहनी भी उपस्थित थे।

डी.ए.वी. अमृतसर ने आर्य समाज के ग्रंथों का वितरण किया

अमृतसर के जोड़ा फाटक पर हुई रेल दुर्घटना कवि-अभिव्यक्ति का विषय बनी

डी.ए.वी. कॉलेज, अमृतसर के संस्कृत विभाग की ओर से मंथनम् सेमिनार हाल में कवि दरबार कार्यक्रम का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया गया। इस कार्यक्रम का उद्घाटन कॉलेज के प्राचार्य डॉ. राजेश कुमार जी ने अपनी ओजस्वी वाणी से किया, कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर के संस्कृत विभाग अध्यक्ष एवं प्रोफेसर प्रसिद्ध बहुभाषी कवि डॉ. दलवीर सिंह चाहल ने की एवं संयोजन कॉलेज के संस्कृत विभाग अध्यक्ष डॉक्टर कुलदीप सिंह आर्य ने किया।

दरबार में 26 वरिष्ठ एवं नवोदित कवियों ने भाग लिया और अपने अपनी गीत, शायरी, ग़ज़ल एवं कविताओं के माध्यम से श्रृंगार, वीर एवं हास्य रस की धाराएँ प्रवाहित कीं। कवियों ने अपनी रचनाओं में अमृतसर के जोड़ा फाटक पर हुई रेल घटना को अपने अश्रुपूर्ण अंदाज में प्रस्तुत किया, देश भक्ति, समाज सुधार की वाह वाह एवं भ्रष्टाचार पर तीखे अंदाज में प्रहार किए गए।

वरिष्ठ कवियों में डॉ. दलबीर सिंह चाहल, सरदार गुरजीत सिंह, डॉ. कुलदीप सिंह आर्य, प्रोफेसर प्रदीप सैली, डॉ. रितु अरोड़ा, प्रोफेसर पूनम कुमारी, डॉक्टर बीबी यादव, प्रोफेसर रवि कुमार झा मुख्य रूप से थे।

नवोदित कवियों में कश्वलेज के छात्र–छात्राएँ चाहत अरोड़ा, शीतल, अनमोल मिश्रा, रिंकू, सुखबीर नमित मेहता, आकाश, शिवम, मुदित, मोनिका, हरचरण सिंह, मनप्रीत सिंह, हर्षित, नितिन, गुरु साहिब सिंह, हरप्रीत सिंह एवं परमेंद्र सिंह आदि प्रमुख रहे।

कॉलेज की तरफ से सभी कवियों को उत्साहवर्धन के लिए पुरस्कार स्वरूप आर्य ग्रंथों का वितरण किया गया जिनमें सत्यार्थ प्रकाश, कॉलेज का प्रकाशन –सत्यार्थ प्रकाश की राष्ट्र को देन एवं वेदों की विश्व को देन ग्रंथ थे।

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल, सैक्टर-15ए, चण्डीगढ़ में हुई भजन-संध्या

डी.ए.वी. मॉडल स्कूल सैक्टर–15–ए चण्डीगढ़ में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा चण्डीगढ़ व आर्य युवा समाज के संयुक्त तत्त्वावधान में भजन संध्या कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसका मुख्य विषय था– "नैतिक मूल्य श्रेष्ठ व्यवहार एवं सम्पूर्ण विकास।" लगभग 300 विद्यार्थियों ने इस भजन संध्या में भाग लिया और ऋषि दयानन्द और आर्य समाज पर आधारित गीतों को गाकर एक सुन्दर समाँ बाँध दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ मंत्रोच्चारण के साथ दीप प्रज्ज्वलित कर पुनश्च ओ३म् ध्वज फहराते हुए किया गया। प्राचार्या श्रीमती अनुजा शर्मा ने आगंतुकों अतिथियों का स्वागत करते हुए विद्यार्थियों व जनसमूह को नैतिक मूल्यों के प्रति जागरूक होने का आह्वान किया।

विद्यालीय 'अनुकम्पा' कार्यक्रम के अन्तर्गत इस अवसर पर आर्य महिला संगठन चण्डीगढ़ की सदस्याओं द्वारा अन्न का दान किया गया। अनाथालय को समर्पित कर दिया गया! इस शुभावसर पर बाल निबंध संग्रह, भाग –3 पुस्तक का विमोचन किय गया।

कार्यक्रम में चण्डीगढ़ पंचकूला, मोहाली के डी.ए.वी. शिक्षण संस्थान के प्राचार्यगण तथा आर्य समाजों से आर्य भाई–बहनों ने काफ़ी भारी संख्या में पधार कर कार्यक्रम की शोभा बढ़ायी। श्री हंसराज गांधार–सलाहकार, अध्यक्ष डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली एवं अध्यक्ष–आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि चण्डीगढ़, श्री रमेश चन्द्र जीवन–चेयरमैन, श्री विजय कुमार–मंत्री, उपसभा प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली एवं अध्यक्ष–उपसभा चण्डीगढ़, श्री सुभाष मढ़िया, श्रीमती उषा गुप्ता, श्री रविन्द्र तलवार– सचिव, डी.ए.वी. कॉलेज प्रबंधकर्त्री समिति नई दिल्ली, श्री अमृतलाल बाहरी–न्यायमूर्ति आदि विशिष्ट लोग इस कार्यक्रम में शामिल हुए।

कार्यक्रम के समापन पर श्री हंसराज गंधार तथा श्री रमेश चन्द्र जीवन दोनों महानुभावों ने अपने आशीर्वाद दिये।

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा मंदिर मार्ग के लिए **एस.के शर्मा** द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित एवं कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन मंदिर मार्ग नई दिल्ली से प्रकाशित मो.–9868894601, 23362110, 23360059 सम्पादक – **पूनम सूरी**